

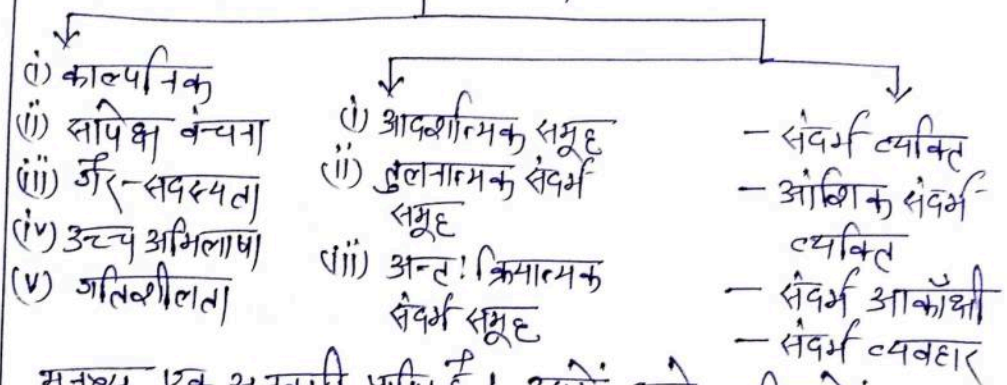
20/10/21

प्रश्न सं०-50

संदर्भ समूहों पर टिप्पणी लिखिए?

उत्तर- संदर्भ समूह का सर्वप्रथम प्रयोग 1942 में हर्बर्ट हॉर्मेन ने किया। इनका प्रसिद्ध लेख "The Psychology of Stereotypes" में किया है। संदर्भ समूह के बारे में विस्तृत एवं वैज्ञानिक विचार महिन ने अपनी पुस्तक "Social Theory and Social Stereotype" में प्रस्तुत किया।

संदर्भ समूह (Reference Groups)



मनुष्य एक अनुकारी प्राणि है। उसमें दूसरे व्यक्तियों अथवा समूहों के अनुकरण की सहज प्रवृत्ति होती है जब कोई व्यक्ति अन्य व्यक्ति को उन्नति करते हुए देखता है तो उसमें भी उसी प्रकार की इच्छा उत्पन्न होती है वह दूसरों से अपनी तुलना करता है तथा उनके पद एवं प्रस्थिति तक पहुँचने के लिए उनके समान व्यवहार करना प्रारम्भ करता है। दूसरों के साथ तुलना के उपरान्त किसे जैसे ऐसे व्यवहार को "संदर्भ व्यवहार" कहा जाता है जिन व्यक्तियों अथवा समूहों के व्यवहार का वह अनुकरण करता है, उन्हें "संदर्भ समूह" कहा जाता है।

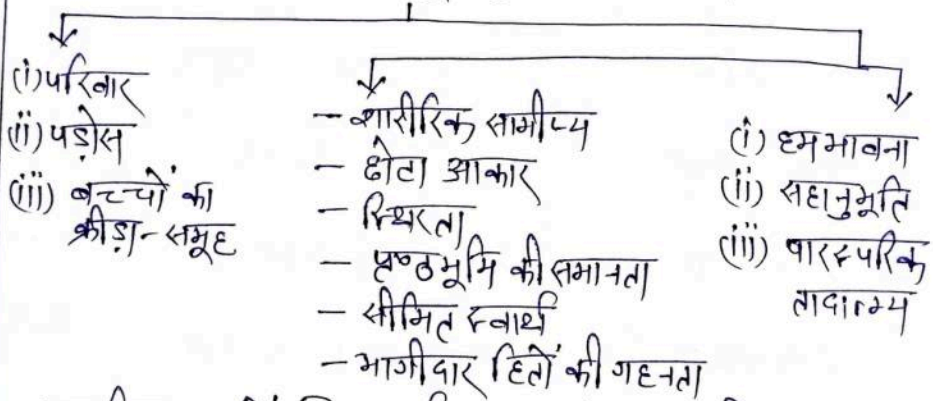
20/01/21

प्रश्न सं०-49

प्राथमिक समूह का क्या अर्थ है, व्याख्या करें?

उत्तर- सी०एच०कूले के कथनानुसार, "प्राथमिक समूह से तात्पर्य उस समूह से है जिसकी विशेषता आग्ने-सामने के प्रत्यक्ष संबंध तथा अनौपचारिक एवं व्यक्तिगत संबंधों एवं पारस्परिक सहयोग पर आधारित है।"

प्राथमिक समूह (PRIMARY GROUP)



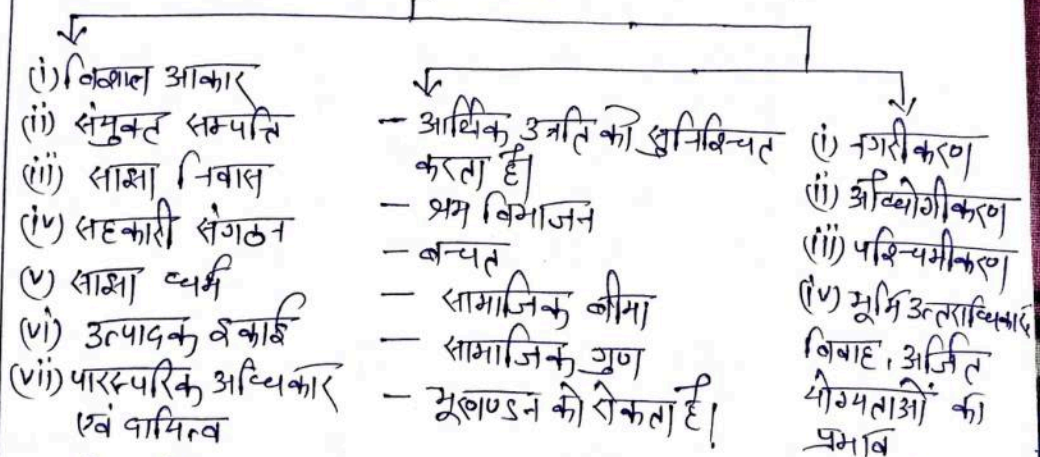
प्राथमिक समूहों से तात्पर्य उन समूहों से है जिनकी विशेषता आग्ने-सामने का व्यक्तिगत संबंध और सहयोग है। इस प्रकार के समूह अनेक अर्थों में प्राथमिक होते हैं परन्तु, मुख्यतः इस अर्थ में कि व्यक्ति की सामाजिक प्रकृति व आदर्शों के निर्माण में वे मूलभूत हैं। व्यक्तिगत संबंधों का परिणाम, मनोवैज्ञानिक रूप में, व्यक्तित्वों का एक सामान्य समूह में घुल-मिल जाना है जिस से कि कम से कम बहुत से प्रयोजनों के लिए व्यक्ति का आत्मसमूह का सामान्य जीवन और उद्देश्य बन जाता है। इस समूह की "दमभावना" कहते हैं, जिसमें सहानुभूति तथा पारस्परिक तादात्म्य है। व्यक्ति समूह की भावना में जीवित रहता है।

20/10/21

प्रश्न सं०-48

संयुक्त परिवार को परिभाषित करते हुए, इसकी विशेषताओं का वर्णन करें?
उत्तर- बराबरी कार्यों के कथनानुसार, " संयुक्त परिवार व्यक्तियों का समूह है, जो एक ही छत के नीचे रहते हैं, एक-दूसरे पर बना भोजन खाते हैं, साझी सम्पत्ति रखते हैं, साझी पूजा में भाग लेते हैं तथा जो आपस में विशेष ज़ादेदारी से बंधे रहते हैं।"

संयुक्त परिवार (JOINT FAMILY)



भारतीय की संकल्पना में संयुक्त परिवार हमेशा से रहा है। भारतीय जनमानस अभी भी पारिवारिक लगाव को अक्षुण्ण बनाए हुए है। परम्परागत रीतिरिवाज का अवलम्बन सेवान्वयों में बना रहता है। हिन्दू विचारधारा आज भी संयुक्त परिवार का समर्थन करती है। मेल-जोल एवं पारस्परिक सामंजस्य भारतीय संयुक्त परिवार के मूलभूत हैं। संयुक्त परिवार एक सहकारी संस्था है, जहाँ प्रत्येक सदस्य जेष्ठ सदस्यों के मार्गदर्शन में अपने कर्तव्यों को पूरा करता है। इसमें वैयक्तिक तथा सामान्य हितों का समन्वय पाया जाता है, जिससे व्यक्ति में श्रेष्ठ नागरिक गुणों का विकास हो।

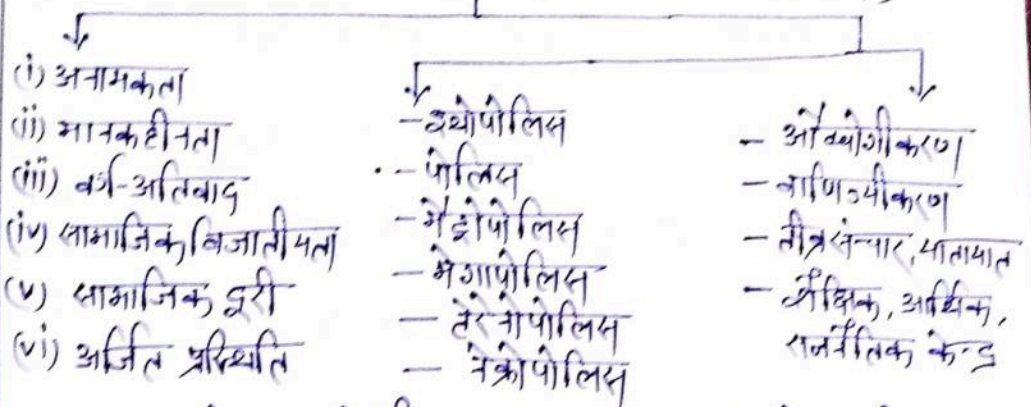
20701011

प्रश्न सं०-47

नगरीय समुदाय क्या है? उसे प्रमुख तत्वों का वर्णन करे!

उत्तर- -चार्ल्स बर्गेल के कथनानुसार, "नगर ऐसी संस्था है जहाँ के अधिकतर निवासी कृषि कार्य के अतिरिक्त अन्य उद्योगों में व्यस्त हैं।"

नगरीय समुदाय (Urban Community)



नगर एक जीवन पहति है। शब्द "(URBANE)" जीवन की इस पहति को ध्वनित करता है। यह फैंक्शनल जीवन, बढ़ता उपभोक्ता-वाद, व्यक्तियों की विद्वत जानकारी एवं बाणी के राजनैतिक ढंग को उंगित करता है। परन्तु क्या जीवन का नगरीय ढंग केवल नगरीय जनसंख्या तक ही सीमित है? जैसा हमें आता है, ग्रामीण व्यक्त भी जीवन के नगरीय ढंगों के प्रभावधीन आ जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र भी जीवन पहति में नगरीकृत हो सकते हैं। जबकि नगरीय समुदाय के सामाजिक लक्षणों एवं जनसांख्यिकीय लक्षणों के गहरा कारणात्मक संबंध हो सकता है। रोजगार के कारण प्रवासन, शैक्षिक, आर्थिक, व्यवसायिक एवं राजनैतिक केन्द्रों के कारण नगरों का जनसंख्या स्वनत्व अधिक होता जा रहा है।

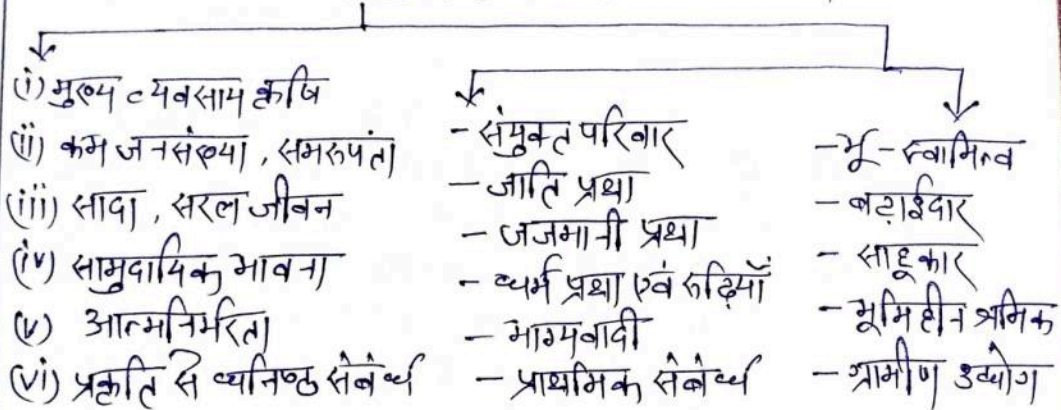
20/10/21

प्रश्न सं०-46

ग्रामीण समुदाय की क्या विशेषताएँ हैं? व्याख्या करें!

उत्तर— के. डेबिस के कथनानुसार, " ग्रामीण समुदाय ऐसे किसी भी कृषि प्रधान स्थायी समाज को कह सकते हैं जिस पर ग्रामीन तथा उद्योग ने अपना प्रभाव न डाला हो। "

ग्रामीण समुदाय (Rural Community)



प्रारम्भिक मानव समुदाय, आखेट एवं शिकार संग्रह पर आधारित था। धीरे-धीरे मनुष्य ने कृषि का ज्ञान अर्जित किया। कृषि के विकास एवं उसके परिणामस्वरूप स्थायी निवास बना रहने लगा, मानव समुदाय अधिक ठिकाण हो गया। देहात का जन्म हुआ जिसका अर्थ था कि मनुष्य ने सामूहिक जीवन के घुमक्कड़ प्रकार से निकल कर जीवन में प्रवेश किया। इस प्रकार देहात एक ऐसा समुदाय है जिसके सदस्यों में एकता की भावना होती है, जिनके पड़ोसी सम्बंध व्यनिष्ठ होते हैं, जो धर्म में विश्वास रखते हैं तथा संयुक्त परिवार में सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। ग्रामीण समुदाय में नगरीकरण का प्रभाव देखा जाता है, जिसने सामाजिक गतिशीलता में बृद्धि की है।

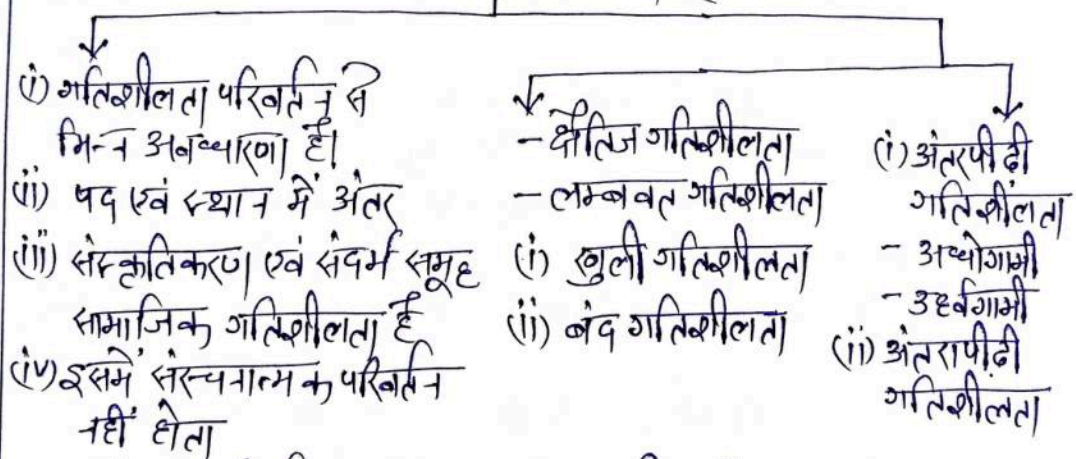
20/10/17

प्रश्न सं० - 45

सामाजिक गतिशीलता पर टिप्पणी लिखिए?

उत्तर- पी० ए० सोरोकिन ने अपनी पुस्तक "Social and Cultural Mobility" में वर्ष 1927 में सामाजिक गतिशीलता शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया। "जब कोई व्यक्ति व समूह एक से दूसरे स्थान एवं एक स्तर से दूसरे स्तर में जाता है तो उसे सामाजिक गतिशीलता कहते हैं।"

सामाजिक गतिशीलता (SOCIAL MOBILITY)



सामाजिक परिवर्तन प्राकृतिक क्रिया है और जिस कारण सामाजिक परिवर्तन होता है, उसी कारण सामाजिक गतिशीलता भी होती है। संभवतः कोई भी समाज सामाजिक गतिशीलता का पूर्णतया निषेध नहीं करता और न ही कोई समाज अगतिशील होता है। मूल सामाजिक परिवर्तन की स्थितियाँ यथा औद्योगिक क्रांति अथवा प्रदेसीय विस्तार सामाजिक गतिशीलता का अवसर प्रदान करती हैं। औद्योगीकरण तथा नगरीकरण ने लोगों को प्रदत्त परिस्थिति से अर्जित परिस्थिति में परिवर्तन के अवसर प्रदान किये, जो प्रत्यक्ष गतिशीलता है।

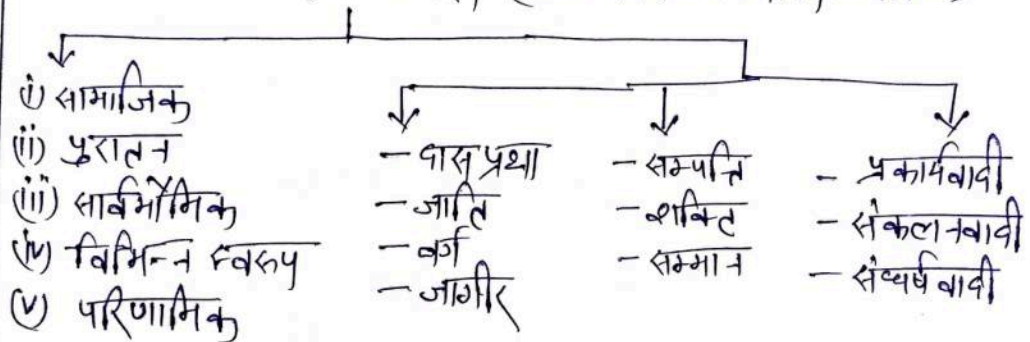
20701017

प्रश्न सं०-44

सामाजिक स्तरीकरण को परिभाषित करते हुए, व्याख्या करें ?

उत्तर- टालकॉट पारसेस के कथनानुसार, " सामाजिक स्तरीकरण वह प्रक्रिया है, जिसमें किसी सामाजिक व्यवस्था में व्यक्तियों का अन्य-से-अन्य के क्रमबद्धता में विभाजन होता है। "

सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification)



प्रस्थिति की असमानता अथवा पद का विभेदीकरण, सामाजिक स्तरीकरण की प्रमुख विशेषता है। जहाँ स्तरीकरण होगा, वहाँ सामाजिक असमानता होगी। यद्यपि मानव ने सर्वत्र ऐसे संसार की परिकल्पना की जिसमें प्रस्थिति समानता हो, कोई भेदभाव न हो। लेकिन यह कतु सत्य है कि अस्तरीकृत समाज केवल कल्पना है। समाज विभिन्न पदों की विभिन्न अधिकार एवं सुविधायें प्रदान करता है। कुछ व्यक्तियों और समूहों को उनके द्वारा भोगे जाने वाली सुविधायें और विशेषाधिकारों के आधार पर दूसरों की अपेक्षा उच्च माना जाता है। विभिन्न पदों से संलग्न मान या प्रतिष्ठा सामाजिक व्यवस्था का एक भाग बन जाती है और यही सामाजिक स्तरीकरण है।

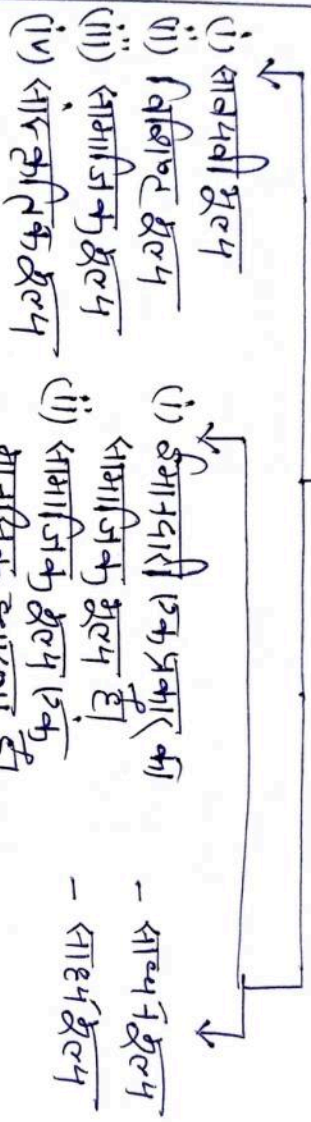
Lesson 17

प्रश्न सं-43

सांभाजिक मूल्यों का संभाज में क्या महत्व है, स्पष्ट करें?

उत्तर- जानस न के नक्षानुसार, " यदि कोई नियम कानून बहल ही उत्त्प श्रेणी का हो तो उसे ही मूल्य (VALUES) कहा जाता है।"

सांभाजिक मूल्य (VALUES)



(i) विमानवारी (विमानकारी) का सांभाजिक मूल्य है - साध्य मूल्य
(ii) सांभाजिक मूल्य - साध्य मूल्य
(iii) सांस्कृतिक मूल्य - साध्य मूल्य

सांभाजिक मूल्य वाह्य होते हैं।

सांभाजिक मूल्य किसी संभाज में प्रचलित वे आदर्श नियम अथवा लक्ष्य होते हैं जिनके प्रति संभाज के सदस्य श्रद्धा रखते हैं। सांभाजिक जीवन में सांभाजिक मूल्यों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मूल्य एक संभान मानक है और वही उत्त्पत्तरीय मानक कहलाता है। स्वयं मानक को मूल्य मान भी मूल्यों के आधार पर होता है। मूल्य एक प्रकार से सांभाजिक भाषा पर्यभाषा है जो संभाज के नियमों तथा कानूनों को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है और सांभाजिक मूल्य संभाज की अग्रणी होती है और संभाज के सदस्य उनके प्रति जागरूक होते हैं।

२०१०१०१

प्रश्न सं०-५२

सामाजिक व्यवस्था में संरक्षितता का क्या महत्व है, व्याख्या करें ?
उत्तर- संरक्षितता (SANCTUARY) का अर्थ सुरक्षा की भाँति
घर से है, जिसका सामाजिक व्यवस्था के सदस्य अपने
आदर्श-नियमों एवं लक्ष्यों की पालना करने हेतु साम्य
के रूप में प्रयोग करते हैं। सामाजिक व्यवस्था कुछ आन्तरिक
या कानूनी और अधिकृत मानकर उन्हें करने की आन्तरिक प्रशान
करती है और कुछ कानूनी का समाप्त-करवाण का विरोधी
मानकर उन्हें आन्तरिक देने से रोक करती है।
किसी कार्य को करने से पूर्व व्यक्ति को यह सोचना पड़ता
है कि उस कार्य के पीछे सामाजिक आन्तरिक है या नहीं।
उदाहरण के लिए, भूख लगना जीवनिक्रिया है पर भूख
को शांत करने के लिए किसी व्यक्ति की बरतु-चूरा
जैसे सामाजिक आन्तरिक शांत व्यवहार नहीं है। ऐसा करने
पर समाज घर देगा।

संरक्षितता सामाजिक भी हो सकती है और नकारात्मक
भी। समाज में प्रेरक व्यवहार को प्रोत्साहन दिया जाता है
जैसे-चोर, लालच, हिंस्र, भ्रष्टाचार, प्रवर्षा एवं उपलब्धि
आदि सामाजिक संरक्षितता है। विचलन को रोकने
के लिए नकारात्मक संरक्षितता का प्रयोग होता है,
जैसे- घर, कारावास एवं आर्थिक घर है।

10/10/21

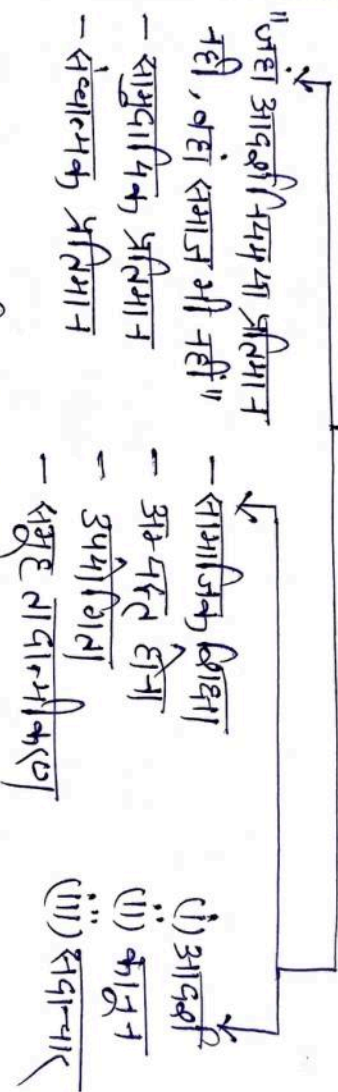
प्रश्न सं०-421

सामाजिक आदर्श नियमों के सामाजिक महत्व का वर्णन करें ?

उत्तर- ब्रूम एवं सेल्जमिन (Broom and Selznick) के कथनानुसार,

" आदर्श नियम (Norms) व्यवहार की रूपरेखाएँ हैं जो उन सीमाओं का निर्धारण करते हैं जिन के अंदर व्यक्ति अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विकल्पात्मक विधियों की रोज़े कर सकते हैं।"

आदर्श नियम (NORMS)



सामाजिक आदर्श नियमों के सामाजिक प्रतिभान या सामाजिक भाषण भी कहते हैं। भाषणों के आधार पर हम किसी मानवीय व्यवहार को अभिवृत्त या अनुचित ठहरा सकते हैं। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज द्वारा स्वीकृत तरीके अपनाता है। वे कहते हैं सामाजिक भाषणों के अभाव में सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। सामाजिक आदर्श नियम एक प्रकार के नियंत्रण हैं। मानव समाज के ही नियंत्रणों के अभाव पर अपने सदस्यों के व्यवहार पर बुरा प्रकार का प्रभाव होता है, जिससे वे सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधनों के रूप में कार्य करते हैं।

20701017

प्रश्न सं०-५०

लोकान्धारों के कार्यों की व्याख्या करें ?

उत्तर- समार के कथनानुसार, "हमारे उद्देश्य हेतु लैटिन शब्द "MORALS" उन लोकरीतियों, जिन्में सही एवं सत्य तथा सामाजिक कल्याण के अर्थ निहित हो, के लिए समग्र रूप में व्यावहारिक तौर पर अध्विक सुविध्याजनक एवं प्राप्य दिखाई देता है।"

लोकान्धार (MORALS)

- (i) वे हमारे अध्विकांश निजी व्यवहार को निश्चित करते हैं।

(ii) वे व्यक्ति का समूह से तादात्म्य स्थापित करते हैं।

(iii) वे सामाजिक सुवृद्धता के संरक्षक हैं।

"लोकरीतियाँ कोष्ठ के जीवन रस अथवा मारी अंग के समान हैं, जबकि लोकान्धार नाभिमूलक के समान हैं।"

लोकान्धार सामाजिक कल्याण के लिए लाभप्रद होते हैं। जबकि कोई व्यक्ति अभय होकर लोकरीतियों की अवज्ञा कर सकता है, वह लोकान्धारों का उल्लंघन नहीं कर सकता, क्योंकि वे समूह मानकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोकान्धार हमें किसी कार्य के करने के सर्वाध्विक प्रमाणीकृत एवं स्वीकृत ढंगों का ज्ञान कराते हैं। वे नियामक होते हैं, अतएव समूह के सदस्यों द्वारा उनका अनुपालन आवश्यक है। लोकान्धारों के विपक्षगामी व्यवहारों की समाज आज्ञा नहीं देता है। लोकान्धारों का उल्लंघन व्यक्ति को अजनबी, विद्रोही, समूह द्वारा बहिष्कृत, उत्पीड़न, उन्मूलन योग्य जीव बना देता है।

20701011

प्रश्न सं०-39

लोकरीतियों का क्या अर्थ है? इनके महत्व को स्पष्ट करें?

उत्तर- लोकरीतियों (Folkways) की संकल्पना विलियम आदम समनर (William Sumner) के नाम के साथ जुड़ी हुई है, जिन्होंने संस्कृति एवं उसके निहित अर्थ का आत्मव्यक्ति लोभाप्रद एवं स्पष्ट विश्लेषण किया। अपने समाजशास्त्रीय ग्रंथ "FOLKWAYS" (1906) में समनर ने मानव व्यवहार के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

लोकरीतियाँ (Folkways)

(i) सहज उत्पत्ति

(ii) स्वीकृत व्यवहार

(iii) विधिष्ठता

(iv) आनुवंशिक

- लोकरीतियाँ परिवर्तनशील हैं।

- लोकरीतियों की संपुष्टियाँ

अपेक्षाकृत होती हैं।

- लोकरीतियों

का उल्लंघन

अपराध एवं चर्चा

का विषय बन जाता है।

लोकरीतियाँ व्यवहार की अत्यंत सामूहिक विधियाँ हैं जो समूह के विकास एवं जीवन को आरवाहन प्रदान करती हैं। उसमें व्यवहार की अंतर्गत विधियाँ सम्मिलित हैं, जिनका मनुष्यों ने सामाजिक जीवन के कार्य-व्यापार हेतु विकास किया है। वे प्रभार एवं रीतियाँ हैं जिन्हें पुरानी पीढ़ियों ने हस्तान्तरित किया है तथा जिसमें समय की परिवर्तनशील आवश्यकताओं के अनुसार नवीन तत्वों को जोड़ दिया गया है। समूह का कोई सदस्य लोकरीति पर आपत्ति नहीं करता तथा न ही वह उसे क्रियान्वित करने हेतु किसी सत्ता की आवश्यकता है।

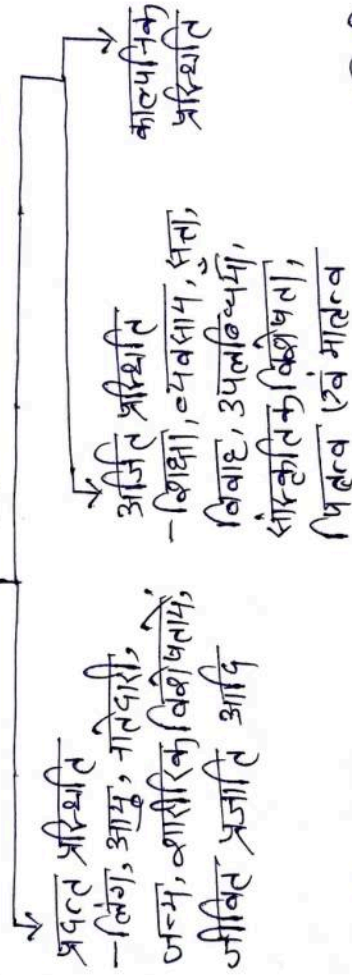
30/10/2017

प्रश्न सं-38

समाज में प्रस्थिति-व्यवस्था के सामाजिक महत्व का वर्णन करें ?

उत्तर- मजूमदार (Majumdar) के कथनानुसार, "प्रस्थिति का अर्थ समूह में व्यक्ति की स्थिति, पारस्परिक दायित्वों एवं विशेषाधिकारों, कर्तव्यों तथा अधिकारों के सामाजिक ताने-बाने में उसके पकड़ है।"

प्रस्थिति (STATUS)



सामाजिक प्रस्थिति व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। समाज में प्रस्थिति व्यक्ति को अपने प्रस्थिति के कारण मिलती है। व्यक्ति की प्रस्थिति में छूट उसको पहले की अपेक्षा अधिक प्रस्थितिपूर्ण बना देती है। समाज एवं प्रस्थिति का घनिष्ठ सम्बन्ध है। व्यक्ति की समाज उसकी प्रस्थिति को निश्चित करती है तथा उसकी समाज प्रस्थिति में परिवर्तन के साथ बदल जाती है। किसी समूह की समाज संरचना उसकी प्रस्थिति संरचना के अनुकूल होती है। प्रस्थिति व्यक्ति को विशेषाधिकार प्रदान करती है, व्यक्ति अपनी सामाजिक प्रस्थिति के कारण अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करता है।

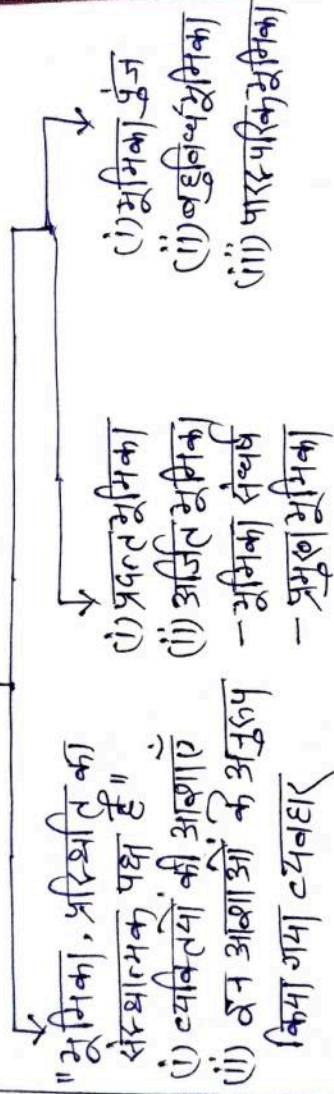
20701017

प्रश्न सं०-37

भूमिका का क्या अर्थ है? आधुनिक समाज में भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर- मनोविज्ञान में भूमिका (ROLE) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जी० एल्थयमंड ने अपनी पुस्तक "माइण्ड सेल्फ एण्ड सोशल लाईफ" में किया है। लेकिन समाजशास्त्र में इसका व्यापक प्रयोग "राल्फ लिंघन" ने अपनी पुस्तक "ए स्टडी ऑफ मैन-1920" में किया है।

भूमिका (ROLE)



आधुनिक समाज में भूमिकाएँ अनगिनत, जटिल, नितान्त भिन्न एवं कभी-कभी संव्यर्थमय होती हैं। तीव्र सामाजिक परिवर्तन के काल में संव्यर्थशील भूमिकाओं से उत्पन्न स्नायु-तनाव अधिक होता है, क्योंकि प्रत्येक भूमिका की अपेक्षाएँ एवं समुदाय की प्रत्याशाएँ अनिश्चित होती हैं। विभिन्न भूमिकाओं का जिस सीमा तक स्पष्ट उल्लेख होगा, और जिस सीमा तक प्रत्येक भूमिका में निर्दिष्ट अधिकारों एवं कर्तव्यों का स्पष्ट रूप से ज्ञान होगा तथा जिस सीमा तक प्रत्येक व्यक्ति अपनी भूमिका को प्रत्याक्षित व्यवहार के अनुसार पूरा करेगा, सामाजिक व्यवस्था उसी सीमा तक सुचारु रूप से चलेगी।

20701017

प्रश्न सं०-36

पर-संस्कृतिग्रहण की प्रक्रिया क्या है, स्पष्ट करें।
उत्तर- संस्कृति-सम्पर्क द्वारा होने वाले परिवर्तनों की प्रक्रिया को पर-संस्कृतिग्रहण (Acculturation) कहते हैं। इस प्रक्रिया में एक संस्कृति दूसरी संस्कृति के तत्वों को स्वीकार अथवा पक्षवश ग्रहण करती है, फलस्वरूप कभी-कभी दूसरी संस्कृति की सम्पूर्ण जीवन-शैली में परिवर्तन आ जाता है। पर-संस्कृतिग्रहण एक द्विवर्ती या उभयपक्षीय प्रक्रिया है जिसमें सम्पर्क में आई हुई दोनों संस्कृतियों के कौन-कौन-से अंशों में आर्द्ध तत्वों, लक्षणों एवं संकुलों का आदान-प्रदान होता है। इस अवस्था का प्रतिपादन सर्वप्रथम रेडफील्ड, लिंटन एवं हरस्कौवित्स द्वारा अपने एक संयुक्त शोधपत्र "मेमोरैण्डम ऑन कस्टडी ऑफ अक्लचरेशन" (1936) में किया गया था। प्रारम्भ में इस अवस्था का प्रयोग काहरी संस्कृति के सम्पर्क के फलस्वरूप आदिवासियों की संस्कृति में होने वाले परिवर्तनों के लिए किया गया था, किन्तु सन् 1930 के दशक से इस अवस्था के क्षेत्र को विकसित करते हुए कुदैन अमरीकी मानवशास्त्रियों ने इसका प्रयोग सामाजिक-संस्कृतिक परिवर्तन और सामाजिक विव्यतन और सांस्कृतिक पतन की समस्याओं के विश्लेषण के साथ-साथ आधुनिक समाजों पर आदिवासीय संस्कृति के संघात के अध्ययनों में भी किया है।

10/10/11

प्रश्न सं०-35

समाज में एकीकरण क्यों आवश्यक है? स्पष्ट करें।

उत्तर— एकीकरण या एकता को सामान्यतः समरूपता या समजातीयता समझ लिया जाता है, किंतु एकीकरण समरूपता नहीं है, अपितु यह संगठन का एक रूप है।

"एकीकरण (Integration) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी रचना के निर्मायक भागों में विभिन्नता होते हुए भी उनके आपसी संबंधों में संगठन होता है।"

इस संगठन में प्रत्येक पृथक्त्व एक सुसम्बद्ध समष्टि में इस प्रकार आबद्ध होता है कि उद्भूत सम्पूर्णता भागों की जोड़ में कुछ भिन्न रूप प्रदर्शित करती है। यह एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें किसी सामाजिक इकाई का प्रत्येक सदस्य नस्ल, जाति या प्रजाति, लिंग, धर्म जैसी विशेषताओं की उपेक्षा करके या उन्हें भुलाकर सामाजिक इकाई की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुख्यधारा में मुक्त रूप से मार्ग लेता है और अपना यथोचित योगदान करता है। परिणामतः

सामाजिक इकाई के सदस्य एक ओर समूह की व्यवस्था को दृढ़ करने से बचाते हैं, तो दूसरी ओर वे उसकी एकता को बनाये रखने के लिए एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

प्रश्न सं०-३५

सांख्यिकरण की प्रक्रिया क्या है? स्पष्ट करें।

उत्तर-

सांख्यिकरण (Assimilation) वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति 'खं' समूह द्वारा समूह, जिसमें वह रहने आने है, के दृष्टियों 'खं' अभिवृत्तियों, उसकी चिंतन प्रणाली 'खं' व्यवहार प्रतिमानों अर्थात् उसके जीवन ढंग की अपनाकर उसकी संरूपित अर्थात् कर लेने है।

हर्नर एवं हंट (Hornor and Hunt) के कथनानुसार, "पारंपरिक

सांस्कृतिक विवरण की प्रक्रिया जिसके द्वारा समूह सामान्य संरूपित के समझी बन जाते हैं, सांख्यिकरण कहलाती है।"

सांख्यिकरण भाषा की वस्तु है। किसी भी बड़े समाज में पूर्ण सांख्यिकरण व्यावहारिक विद्यमान दबा की अपेक्षा व्यापक एक काल्पनिक वस्तु है। आधुनिक समूह न केवल मूल-निवासियों की संरूपित में योजना देने है बल्कि बहुरा-सी अपनी विरोधनाओं को भी बनाये रखने है। इसके

परिणामस्वरूप सांस्कृतिक बहुलवाद (Cultural Pluralism) का उत्पन्न होता है जो अपूर्ण सांख्यिकरण का व्योमक है।

जब दो विभिन्न संस्कृतियों का सम्पर्क होता है तो प्रारम्भ में उन दोनों के मध्य पारस्परिक संघर्ष की भावना पायी जाती है, परंतु वे व्यभिचारी-व्यभिचारी एक दूसरे के सांस्कृतिक लक्ष्यों को आत्मसात् कर लेती है। सांख्यिकरण की शक्ति सांख्यिकरण भी सीखने की प्रक्रिया है, परंतु यह प्रक्रिया का आकार नहीं होता है, जब व्यक्ति अन्य संस्कृति के सम्पर्क में आता है।

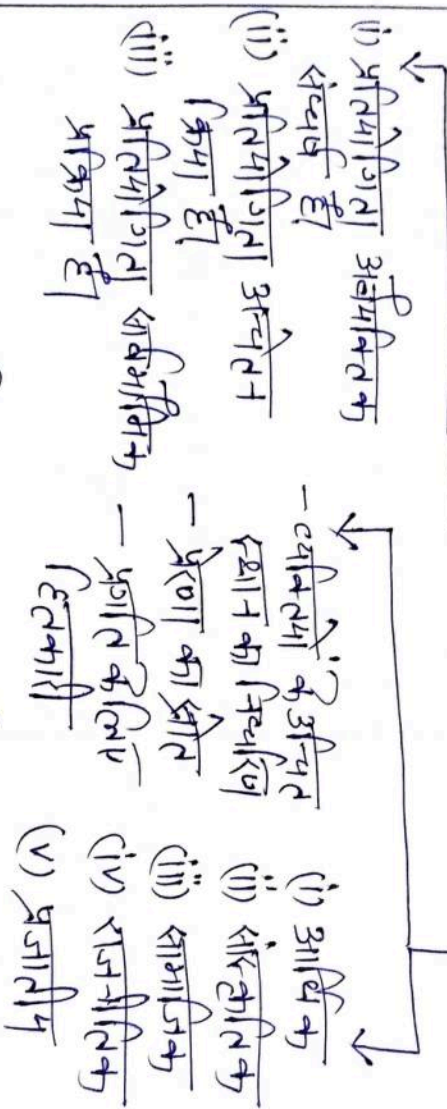
NO7010117

प्रश्न सं०-33

प्रतियोगिता क्या है? व्याख्या करें।

उत्तर- प्रतियोगिता सामाजिक संघर्ष का सर्वाधिक बुरा स्वरूप है। मनुभाषार (Manuvar) के कथनानुसार, "प्रतियोगिता समाज प्राणियों में ऐसी वस्तुओं एवं सेवाओं को प्राप्त करने के लिए अविभाजित संघर्ष है जिनकी जाग सीमित और कम है।"

प्रतियोगिता (Competition)



प्रतियोगिता संघर्ष का एक पहलू है जो न केवल मानव समाज बल्कि पशु समाज में भी व्याप्त है। यह एक ऐसा लक्ष्य है जो व्यक्ति को एक-दूसरे के विरुद्ध कार्य करने को बाध्य करता है। यह जीवित रहने के लिए सर्वव्यापी संघर्ष का प्राकृतिक परिणाम है। यह उस समय घटती है, जब मनुष्यों द्वारा वांछित वस्तुओं की पूर्ति अपर्याप्त होती है। अपर्याप्त उस अर्थ में कि एक मनुष्य को यह मनचाही आजा में नहीं मिल सकती है।

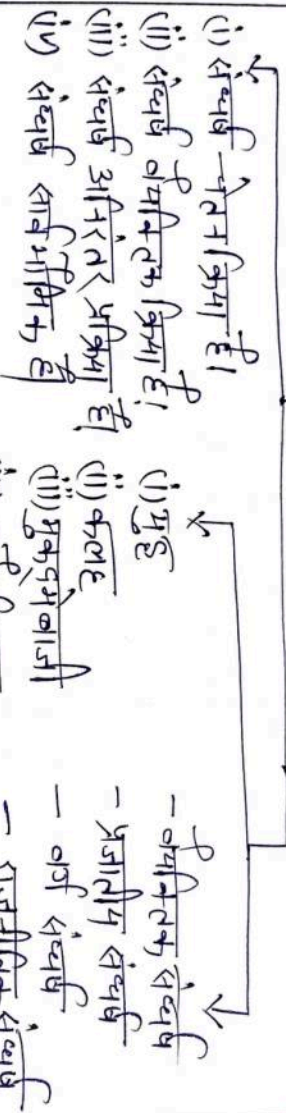
20/10/21

प्रश्न सं०-32

समाज में संघर्ष की क्या शक्ति है? व्याख्या करें।

उत्तर- संघर्ष मानव समाजों में सर्वत्र निरन्तर सामाजिक प्रक्रिया है। जॉर्ज रिजेल के कथनानुसार, "संघर्ष रहित समाज संभूत का अस्तित्व अद्वयार्थक तथा असंभव है।"

संघर्ष (Conflict)



संघर्ष सामाजिक है। यह सब कारणों (जैसे स्थानों में पाया जाता है) इसी कारण भी समाज समाज नहीं रहा जिसमें कुछ व्यक्ति या समूह संघर्ष में न आया हो। संघर्ष भूलभूल। समूहों तथा समाजों में (जैसे समूहों तथा समाजों के सदस्य हों) के संघर्षों का परिणाम है। संघर्ष समाज के जीवन के लक्षणों (जैसे समाजों की वृद्धि, आबादी, अर्थव्यवस्था, जहाँ समाजों में होने वाले परिवर्तनों की गति में अंतर होने के कारण भी उत्पन्न होता है) कुछ संघर्ष समाज का जीवन है। प्रकृति असंघर्ष से जन्म लेती है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति, वर्ग, संस्था अपने जीवन आदर्शों की प्राप्ति का प्रयत्न करने है।

१०१०१०१

प्रश्न सं०-३०

सांस्कृतिक सापेक्षता की व्याख्या करें?

उत्तर- सांस्कृतिक सापेक्षवाद (Cultural Relativism) वह बात पर ज़ोर देता है कि अवधारणाएँ समाजिक रूप से निर्मित होती हैं। "हर्षकौविद्वत्" ने सांस्कृतिक सापेक्षवाद को जड़ का प्रयोज किया है। वह को अर्थ होता है विभिन्न संस्कृतियों का पाया जाना। वह हमें सभी सांस्कृतिक समाज होती, "न कोई अच्छी न कोई बुरी" जैसे भारत में अभिवादन में हाथ जोड़ना, अश्लील की मर्यादा जनजाति में एक-दूसरे पर झुकना। इस प्रकार विवाह की रीतियों विभिन्न समाजों में भिन्नता पूर्ण है लेकिन सब को अर्थ एक है अर्थात् एक ही प्रक्रिया विभिन्न समाजों में विभिन्न संस्कृतियों के अनुसार होती है। सांस्कृतिक सापेक्षवाद को सांस्कृतिक निष्पक्षता भी कहते हैं।

प्रत्येक संस्कृति अपनी-अपनी विशेष परिस्थितियों के साथ अपने ढंग से समायोजित करती है। अतः किसी एक संस्कृति को दूसरों के किसी अन्य संस्कृति के मानदण्डों के अनुसार नहीं किया जा सकता है। अतः किसी व्यवहार का दूसरों को करने समय स्थान विशेष की संस्कृति के लाने-बाने तथा व्यवहार के परिप्रेक्ष्य की हान में रोक कर किया जाना चाहिए। पीटर बेंच के कथानुसार, "हमारा धर्मार्थी भाव समाजिक रूप से निर्मित है और यह एक समाज के विवेकमान मान पर आधारित होता है।"

20701017

प्रश्न सं०-29

बहुसांस्कृतिकवाद क्या है, व्याख्या करें ?

उत्तर- बहुसांस्कृतिकवाद (Multiculturalism) का विचार समरूपीकरण (मैजोरिटी-वालिज्म) का उल्टा या प्रतिलोम है। यह सांस्कृतिक विविधता पर जोर देता है। बहुसांस्कृतिकवाद श्रुतः अमेरिकी परिस्थिति की उपज है। वहाँ श्वेत-अमेरिकी पहचान के आध्वार पर निर्मित अमेरिकीपन की शर्तों को बदलने के लिए चले प्रति-सांस्कृतिक एवं मानवाधिकार आंदोलनों के फलस्वरूप हुआ है। अमेरिकी समाज को "प्युलनबरीन पात्र" (मेल्टिंग पॉट) की ध्वजा की जाती है। वल व्याख्या के स्थान पर "सलाद का पात्र" की व्याख्या प्रस्तुत की गयी है, जो परस्पर विविधताओं पर जोर देती है। यह नई व्याख्या वल काल पर जोर देती है कि एक राष्ट्र की सीमाओं में रहते हुए भी विविध जातीय संस्कृतियाँ अघनी अलग-2 पहचान बनाये रखती हैं।

एक आदर्श बहु-सांस्कृतिक समाज सांस्कृतिक विभिन्नताओं जैसे- धर्म, भाषा, जाति, प्रजाति, नस्ल आदि की प्रशम देता है। वल प्रकार का समाज दोहरे-2 अल्पसंख्यक समूहों के अस्तित्व को बनाये रखता है। आदर्शतः ऐसे समाज में दूसरे लोगों की सांस्कृतिक परम्पराओं की सम्मान देते हुए विकसित होने के अवसर आध्वारित गैर-उपलब्ध करना है।

20/10/21

प्रश्न सं०-२४

संस्कृति बहुलतावाद क्या है? व्याख्या करें।

उत्तर- किसी सामाजिक-आर्थिक अथवा राजनीतिक इकाई के अन्तर्गत बहु-व्यवस्थाओं या उपव्यवस्थाओं की उपस्थिति को बहुलतावाद (Pluralism) कहते हैं।

वैसे सामाजिक सांस्कृतिक दोनों प्रकार की बहुलताओं का समग्रण हो सकता है। इस आधार पर एक ही राजनीतिक इकाई (राष्ट्र/राज्य) में माघा बहुलवाद, मस्ली बहुलवाद, धार्मिक बहुलवाद आदि संभव हैं। सांस्कृतिक बहुलतावाद में विभिन्न समूह अपनी विभिन्न सांस्कृतिक विशेषताओं, प्रतिभाओं, उप-व्यवस्थाओं और संस्थाओं को बनाये रखते हैं।

इन विभिन्न विशेषताओं तथा धर्म, व्यर्थ, भाषा, जाति, प्रजाति की सीमाओं को खत्म नहीं किया जाता, अपितु उन्हें अपने-अपने दायरे में फलने-फूलने दिया जाता है। बहुलतावाद मूलतः इस विस्वासा पर आधारित है कि विभिन्न समूह अपनी विभिन्नताओं को स्वीकार करते हुए एक राष्ट्र-राज्य में एक साथ रह सकते हैं तथा वे अपने राष्ट्र-राज्य की समृद्धि में सकारात्मक योगदान कर सकते हैं। वास्तव में बहुलतावाद की दो प्रमुख आवश्यकताएँ हैं—(i) सहिष्णुता और (ii) समूहों के मध्य अच्छे संबंध। भारत एवं संयुक्त राज्य अमेरिका बहुल समाज के अच्छे उदाहरण हैं।

20/10/2017

प्रश्न सं०-२७

सभ्यता से आप क्या समझते हैं, स्पष्ट करें ?
उत्तर- मेगास्रर के कथनानुसार, "सभ्यता वाक्य का प्रयोग उपयोगी वस्तुओं, जीवन की स्थितियों को नियंत्रित करने के लिए मानव द्वारा जोजित समस्त संगठन तथा योजना के लिये किया। विवद्वज्ज लक्ष्यों की सिद्धि हेतु साध्य के लिए प्रयुक्त होती है। उनकी दृष्टि बसलिर की जाती है, हार्मिक साधनों के रूप में उनका उपयोग करने पर कुछ संतुष्टियाँ प्राप्त कर सके।"

सभ्यता (Civilization)

↓
आगमन ने जिसे
"भौतिक संस्कृति"
कहा है, उसी को
मेगास्रर एवं पेज
ने "सभ्यता" कहा है

- ↓
- (i) सभ्यता में मानव निर्मित भौतिक वस्तुएं सम्मिलित होती हैं।
 - (ii) सभ्यता धीरे धीरे होती है।
 - (iii) सभ्यता परिवर्तनशील है।
 - (iv) मानव आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है।
 - (v) सभ्यता का सम्बन्ध वाद्य आचरण एवं परिस्थितियों से होता है।

मानव को चाहिये कि वह अपने अन्वेषण, नवीन प्रविधिकों एवं योजनाओं का अपने मूल्यों के प्रकाश में विवेचन करे। प्रत्येक मानव समुदाय एवं प्रत्येक युग का वस्तु निरीक्षण का अपना दृष्टिकोण होता है, वस की अपनी विविध मनोवृत्तियाँ एवं विचारों के रूप एवं वर्णन होते हैं। सभ्यता युग की वर्णिका; शापदण्ड एवं विचारवर्ष से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती है। मेगास्रर के अनुसार, "सभ्यता न केवल उन्नति करती, बल्कि यह सर्वत्र उन्नति करती है, जबकि कि सामाजिक निरन्तरता का विपत्तिजनक अवरोध न हो।"

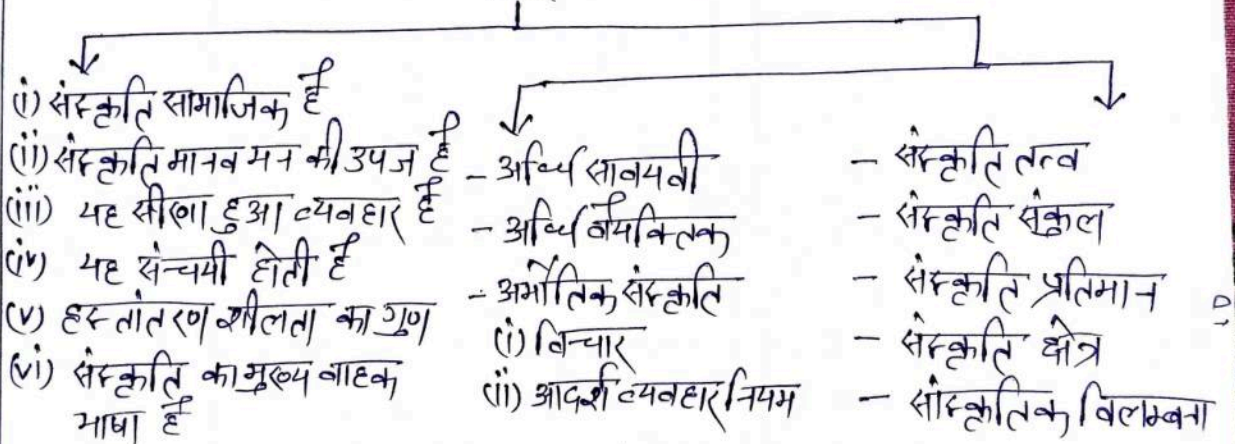
20701017

प्रश्न सं०-26

आप संस्कृति से क्या अर्थ समझते हैं? पूर्णतया व्याख्या करें!

उत्तर- ई०वी०टाइलर के कथनानुसार, "संस्कृति वह सम्पूर्ण जटिलता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, प्रथा तथा वे सभी दमताएँ एवं गुण सम्मिलित हैं जिन्हें मानव, समाज का सदस्य होने के नाते सीखाकर विरासत के रूप में प्राप्त करते हैं"। संस्कृति एक सीला हुआ व्यवहार है जिसे मनुष्य अपने पास कुछ समय तक संन्यत करता है फिर पीढ़ी-दर-पीढ़ी सिखाकर उसका हस्तांतरण करता है।

संस्कृति (CULTURE)



समाजशास्त्र में हम "संस्कृति" का प्रयोग अर्जित व्यवहारों के लिए करते हैं जिनका समूह के सदस्यों द्वारा पालन किया जाता है तथा जो समूह के सदस्यों के मध्य हस्तांतरित होते हैं। यह एक संग्रह है जिसे नई पीढ़ी उत्तराधिकार में प्राप्त करती है। यह एक विरासत है जिसमें विषय जन्म लेता है वस्तु प्रकार, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होता जो पूर्णतया संस्कृतिविहीन हो, क्योंकि व्यक्ति आवश्यकतावश अपने समूह की संस्कृति में जन्म से भागीदार होते हैं। "परम्परा द्वारा अर्जन" का अभिप्राय यह है कि मनुष्य में समूह के सीखने की योग्यता होती है।

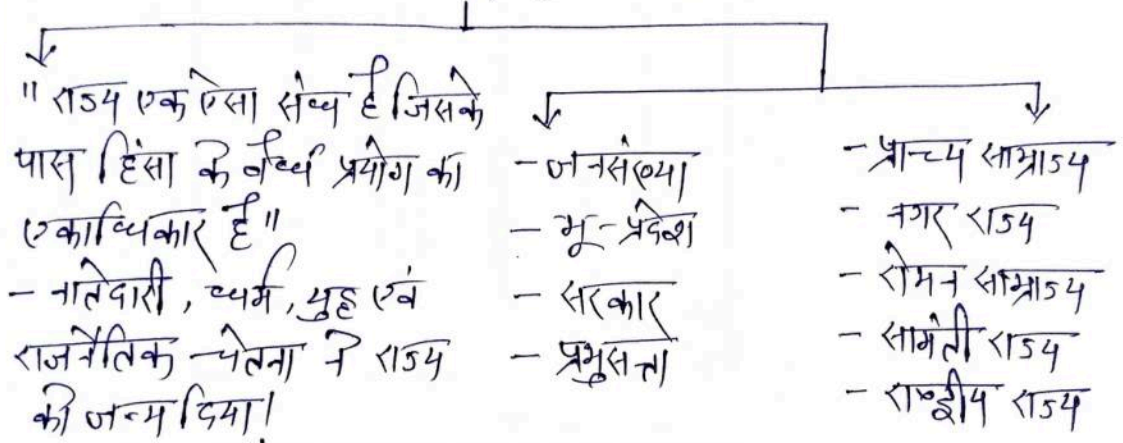
10/10/17

प्रश्न सं०-25

राज्य को परिभाषित करते हुए, इसकी विशेषताओं का वर्णन करें?

उत्तर- राज्य (State) व्यक्तियों के सामाजिक सम्बन्धों को नियंत्रण करने वाला सर्वाधिकारवाला संगठन है एवं समाज का सम्पूर्ण नियंत्रण करता है।

राज्य (STATE)



सामाजिक संगठन के रूप में वर्तमान राज्य शान्ति, स्थिरता बनाये रखने में अभी तक विकसित सभी रूपों में सर्वोत्तम उपाय है। व्यक्ति संलग्न को वैधता प्रदान करते हुए राज्य सत्ता का तार्किक वैधानिक स्वरूप बना हुआ है। "जनता के लिए, जनता के द्वारा, जनता का शासन" जनसम्प्रभुता का प्रतीक है। प्रजातांत्रिक राष्ट्रीय राज्य का स्वरूप वर्तमान राज्य का स्वीकृत माडल है। भारत में जनकैश के द्वारा कोई राजनैतिक दल या राजनैतिक गठबंधन सत्ता में आता है। सार्वभौमिक व्यक्त गणराज्य राजनैतिक परिवर्तन का माध्यम है, जिसमें संप्रभुता जनता में निहित है।

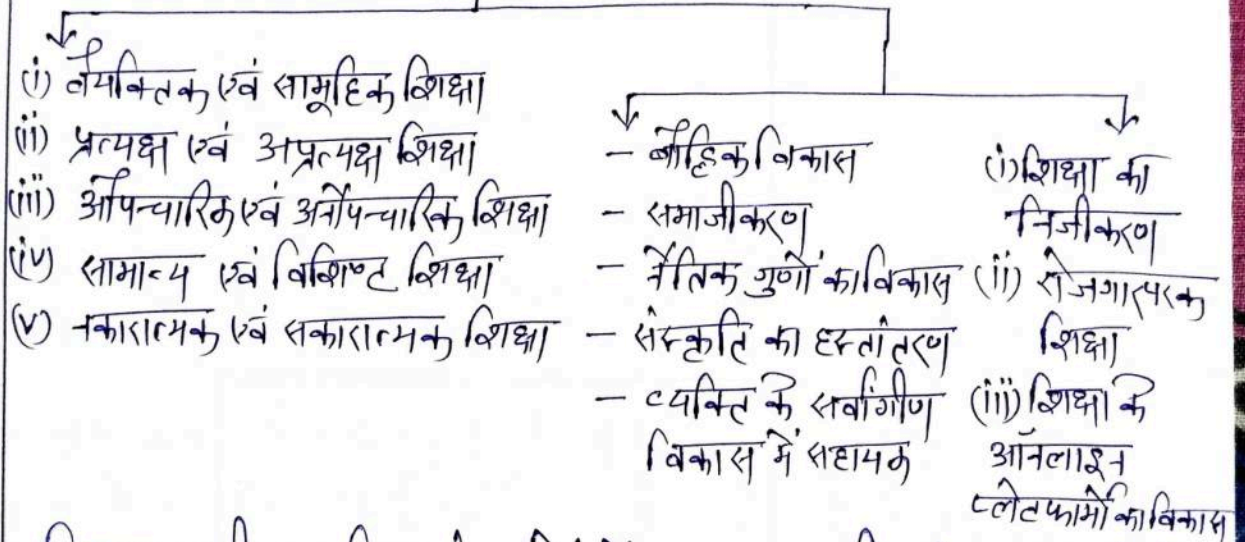
1070101T

प्रश्न सं०-24

शिक्षा से आप क्या समझते हैं? व्याख्या करें!

उत्तर— शिक्षा (Education) प्राचीन काल से ही रूढ़ि का विषय रही है क्योंकि मनुष्य का जन्म एक जीविक प्राणि स्वरूप जिससे प्रकृति के प्राणी के रूप में रहा है। "शिक्षा वह संस्था है जिसका केन्द्रीय तत्व ज्ञान का संग्रह है।"

शिक्षा (EDUCATION)



शिक्षा, सभी सामाजिक संस्थाओं में ज्यादा प्रभावी भूमिका में रही है। समाज में समाजीकरण के लिए शिक्षा प्रमुख कारक है, व्यक्ति का पूर्ण विकास शिक्षा के ही द्वारा सम्भव है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के उपकरण का कार्य करती है। आधुनिक शिक्षा लोगों की कठोरता, रुढ़िवादिता, जड़ता जैसे दृष्टिकोण को तार्किकता, दूरदर्शिता एवं गतिशीलता में परिवर्तित कर देती है। लोगों की सोच एवं दृष्टिकोण में होने वाला परिवर्तन समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना में भी परिवर्तन कर देती है।

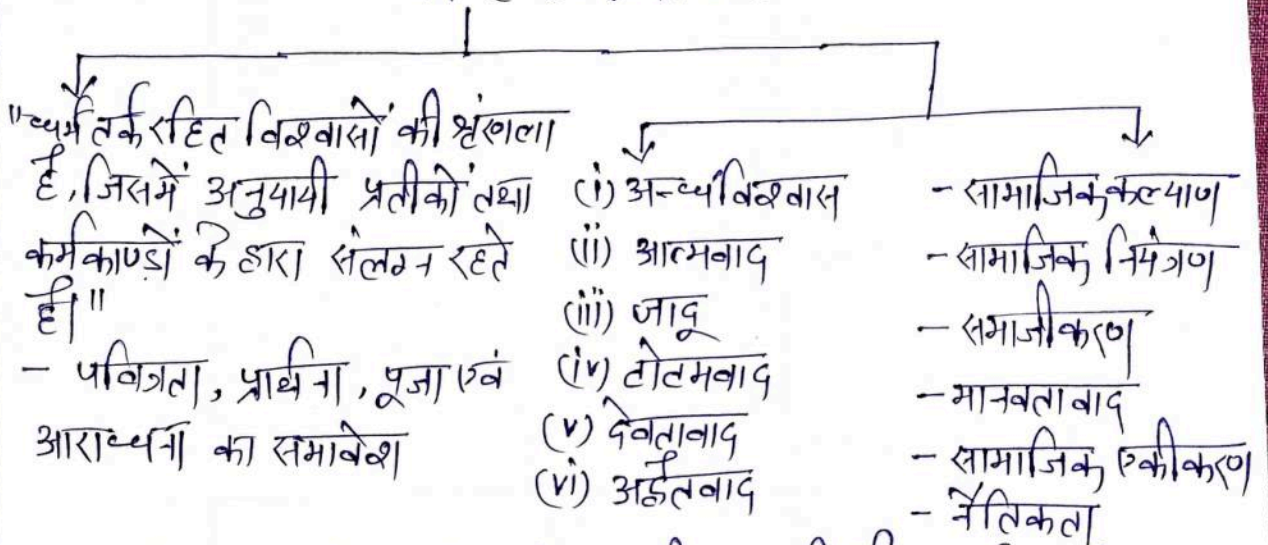
20701017

प्रश्न सं०-23

धर्म के सामाजिक महत्व की व्याख्या करें?

उत्तर- धर्म (Religion) उत्पत्ति "धृ" व्याप्त से हुई है, जिसका अर्थ है व्याख्यान करना। रिलीजन लाटिन के Religios तथा Religio से बना है, जिसका अर्थ है "एक सूत्र में पिरोना"।

धर्म (RELIGION)



आधुनिक समाज में जटिलताये बढ़ती जा रही है, धर्म का भी स्वरूप पहले जैसा नहीं रहा। नगरीकरण तथा औद्योगीकरण ने धार्मिक नियंत्रण को कमोवेश शिथिल कर दिया है। व्यक्तिवादी सोच तथा राज्य की संरचना ने धर्म के विषय को सार्वभौम धर्मनिरपेक्षता में बदल दिया है। लोकतांत्रिक व्यवस्था, उदारवादी पूंजीवाद ने लोककल्याण के साथ धर्मनिरपेक्षता के दर्शन को प्रभावी बनाया है। "सभी धर्मों का समान आदर"

एक सारवान तथ्य है, भारत ऐसे बहुभाषी, बहुधार्मिक, बहुजाति देश में यह उपयुक्त है धर्म का सार नैतिकता पूर्ण मानवतावाद में है, जिसमें सभी को समाहित किया है।

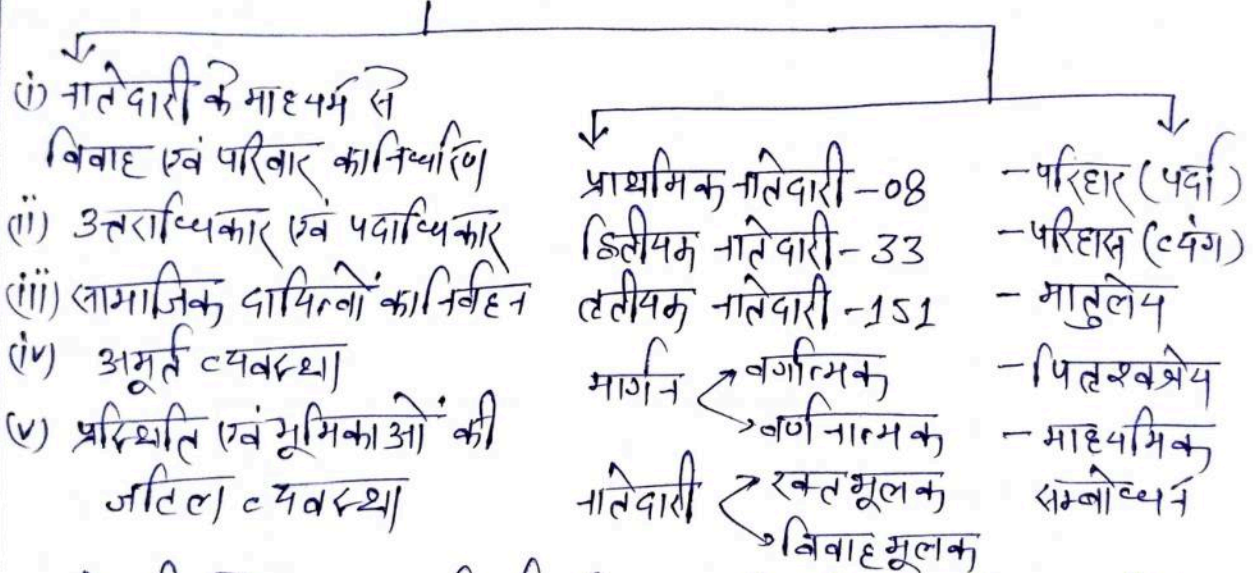
20701017

प्रश्न सं०-22

नातेदारी का क्या अर्थ है? इसके प्रकारों का वर्णन करें।

उत्तर- अंग्रेजी शब्द "Kinship" की हिन्दी व्युत्पत्ति, नातेदारी, स्वजन, संगोपता आदि कई नामों से जानी जाती है। नातेदारी एवं विवाह जीवन के आव्यारमूत तत्व हैं। मॉनरच्छा ने विवाह को और विवाह ने परिवार एवं नातेदारी को जन्म दिया।

नातेदारी (KINSHIP)



नातेदारी ने समाज का निर्माण किया, नातेदारी ने जीवन साथी के चयन में प्रमुख भूमिका निभाई है। विवाह जहाँ स्त्री/पुरुष को पति/पत्नी बनाता है, वहीं स्त्री/पुरुष की भूमिकाओं में परिवर्तन करता है। नातेदारी सेलियाँ नातेदारों के महत्व भूमिका-विषयक सम्बन्धों को आधारित करती है। नातेदारी व्यक्तियों के अन्तः सम्बन्धों की मार्गदर्शक है। नातेदारी पिता-पुत्री, माई-बहन, दामाद-सास एवं वंशीय सदस्यों तथा जातीय सदस्यों के महत्व उचित एवं मान्य सम्बन्धों को परिभाषित करती है।

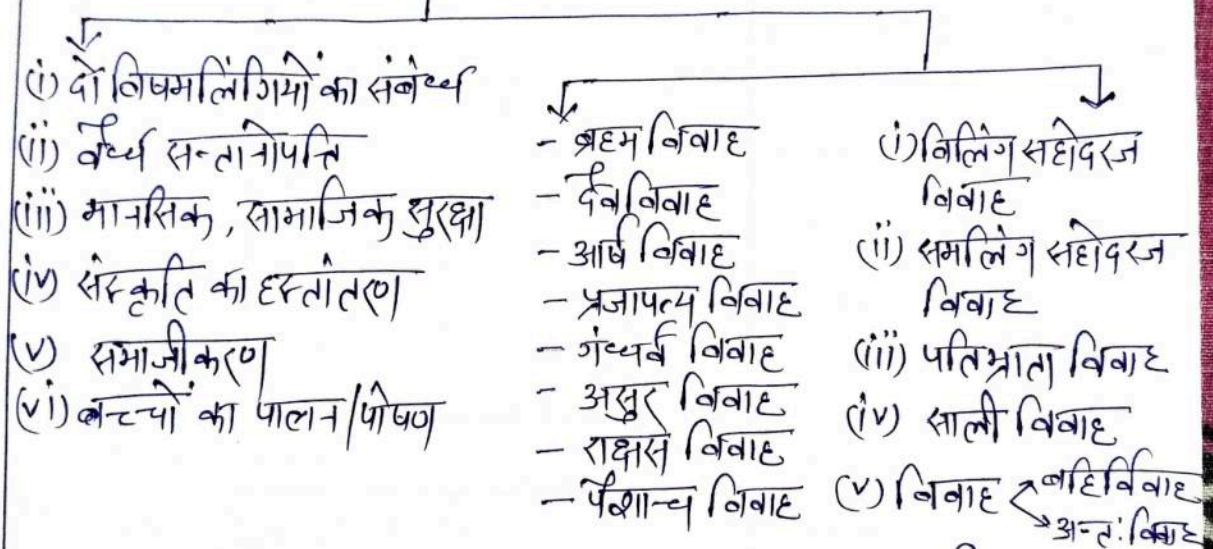
10/10/17

प्रश्न सं०-21

विवाह के प्रमुख रूपों का वर्णन करें?

उत्तर- विवाह दो विषमलिंगियों को पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने की सामाजिक, धार्मिक एवं कानूनी स्वीकृति है।

विवाह (MARRIAGE)



विवाह, सबसे प्राचीन सामाजिक संस्थाओं में से एक है, सभी धर्मों में विवाह पाया जाता है, सिर्फ रीति-रिवाज एवं तरीकों का अंतर रहता है। विवाह में जीवनसाथी का चयन महत्वपूर्ण विषय रहा है, परिवार, समाज तथा नरिदारी, जीवन साथी के चयन में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। राज्य भी विवाह का नियमन करता है, आयु तथा संबंधों में समानता, नियंत्रण का कार्य करता है। शिक्षा तथा धर्म दोनों ही विवाह को सामाजिक आधार प्रदान करते हैं। सामंजस्य तथा सहयोग स्वस्थ वैवाहिक संबंधों का आधार है। समाज, परिवार एवं विवाह संरचना का समन्वय है।

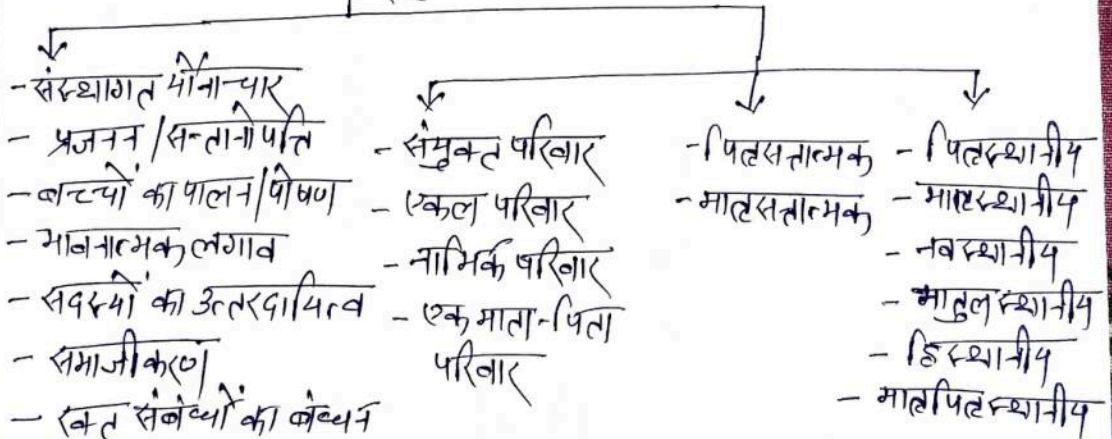
20/10/21

प्रश्न सं० - 20

परिवार के कार्यों का वर्णन कीजिए, इसका सामाजिक महत्व क्या है?

उत्तर- Family लैटिन शब्द "Famulus" से बना है और यह Famulus शब्द एल्मन ने अपनी पुस्तक "Sociology of Family" में प्रतिपादित किया। Family शब्द एक ऐसी समिति, संस्था है, जहाँ पति-पत्नी एक निवास में बच्चों सहित या बच्चों रहित रहते हैं।

परिवार (FAMILY)



परिवार समाज का एक अत्यंत सीमित समूह है, तथापि यह अपनी बिलक्षणता के कारण सबसे मिन समूह है। यह सबसे छोटा नातेदारी समूह है। इसका आरम्भ उस समय होता है जब दो विषमलिंगी साथी विवाह करते हैं, जब पुत्रविवाह कर लेते हैं, तो इसका रूप बदल जाता है। जब बच्चे होते तथा पूर्णतया माता-पिता पर आश्रित होते हैं तो परिवार एक संगठित मानव समूह दिखाई देता है, जब बच्चे बड़े होते हैं तो यह संगठन ढीला होने लगता है। बच्चे विवाह करके परिवार का विस्तार करते हैं।

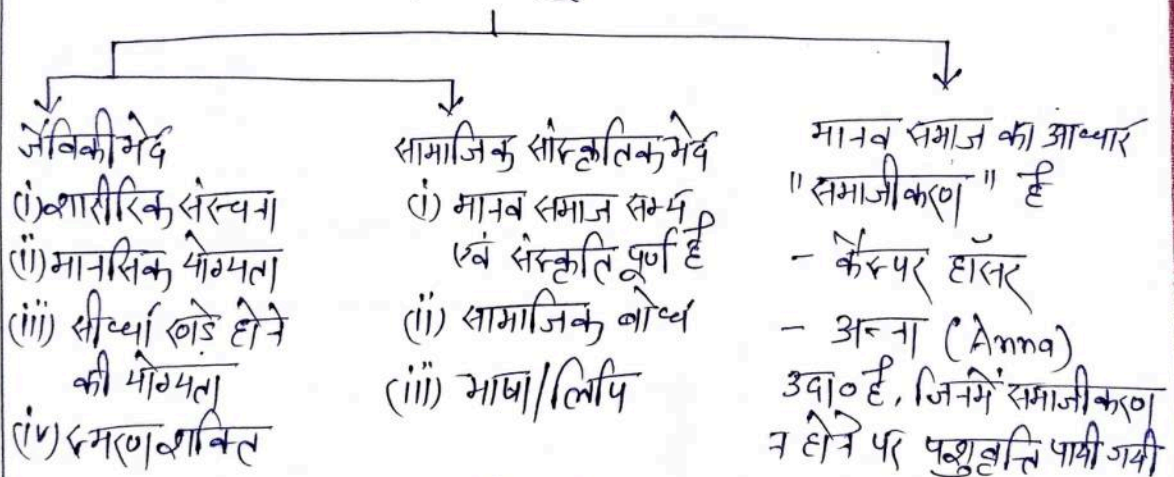
20/10/17

प्रश्न सं०-19

मानव समाज एवं पशुसमाज के अंतर की व्याख्या करें?

उत्तर- समाज उन सामाजिक सम्बन्धों का नाम है जिसके माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से सम्बन्धित है। परन्तु समाज केवल मनुष्यों का ही नहीं होता। वस्तुतः कई प्रकार के पशु समाज भी हैं। केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि पशु भी अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु समाज में रहना चाहते हैं।

मानव समाज एवं पशु समाज में भेद



मनुष्य की केन्द्रीय या सम्पूर्ण एकीकरणिक मानसिक शक्ति, जो कि पशु की केन्द्रीय एकीकरणिक शक्ति से निश्चय ही उच्च है। केवल मनुष्य ने ही भाषा एवं लिपि का आविर्भावजनक विकास कर पाया है। यदि पशु यह काम कर लेते तो वे भी मनुष्य बन जाते। अतः मानवों ने पशुओं की अभ्यास के द्वारा क्रिया करना सीखाया, परन्तु नियंत्रण योग्यता या विवेक मनुष्य की ही विशेषता है। इसलिए समाजशास्त्र में हमारा संबंध मानव समाज से है।

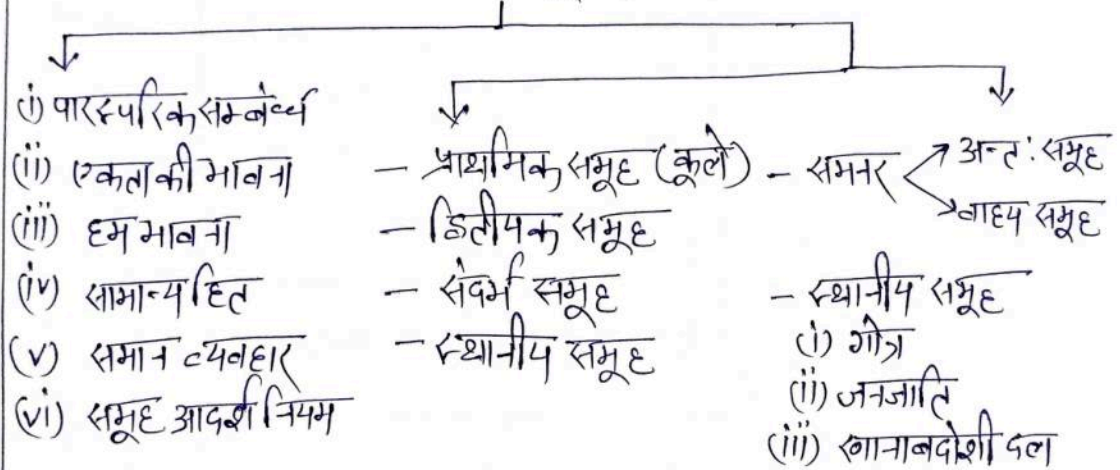
20/01/21

प्रश्न सं०-18

सामाजिक समूह को परिभाषित करते हुए, व्याख्या करें ?

उत्तर- मनुष्य एक सामाजिक प्राणि है। बिल्कुल अकेला व्यक्ति कोरी कल्पना है। वह कभी भी अकेला नहीं रह सकता। उसका दैनिक जीवन अधिकतर समूहों में भाग लेकर व्यतीत होता है।

सामाजिक समूह (SOCIAL GROUP)



सामाजिक समूह वो या दो से अधिक व्यक्तियों का संकलन है जो एक-दूसरे के साथ अन्तःक्रिया करते हैं, जिनके सामान्य उद्देश्य हैं तथा जो समान क्रियाएँ करते हैं। यह एक क्रिकेट क्लब अथवा राजनैतिक दल हो सकता है। इसका विस्तार एक युगल समूह से लेकर लाखों व्यक्तियों के समूह तक हो सकता है। "संग्रह" में अन्तःक्रिया का तत्त्व विद्यमान नहीं होता, अतएव यह समूह से भिन्न होता है जिसमें हृदय अन्तःक्रिया विद्यमान होती है। सामाजिक समूह का सार भौतिक निकटता नहीं है, अपितु संयुक्त अन्तःक्रिया की चेतना है।

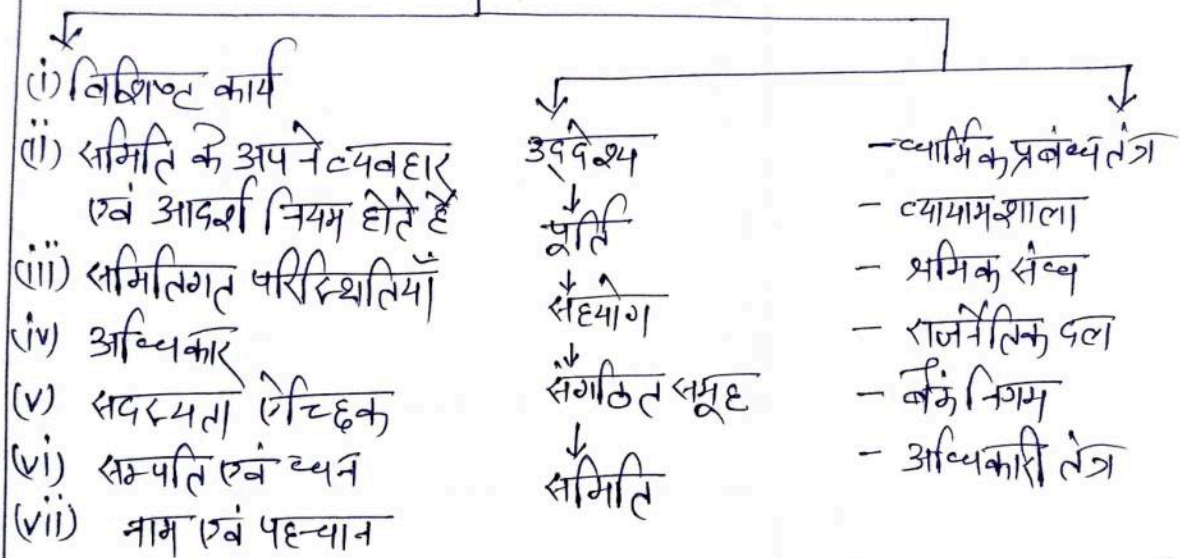
20/10/17

प्रश्न सं०-17

समिति से आप क्या समझते हैं, व्याख्या करें?

उत्तर- "समिति (Association) किसी विशेष प्रयोजन या उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संगठित मनुष्यों का समूह है।"

समिति (Association)



बोगार्डस (Bogardus) के अनुसार, समितिनिर्माण की तीन दशाएँ हैं-

- व्यक्तियों का समूह होना-चाहिये।
- ये व्यक्ति संगठित होने-चाहिये।
- उनका कोई सामान्य उद्देश्य होना-चाहिये जिसकी प्राप्ति हेतु वे संगठित हुए हैं।

समिति व्यक्तियों का अस्थायी समूह है जो सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति हेतु एकत्र होते हैं। इसका किसी व्यक्ति के लिए उस समय तक महत्व है जब तक यह उसके उद्देश्य की पूर्ति करती है वह इसे किसी समय परित्याग कर सकता है।

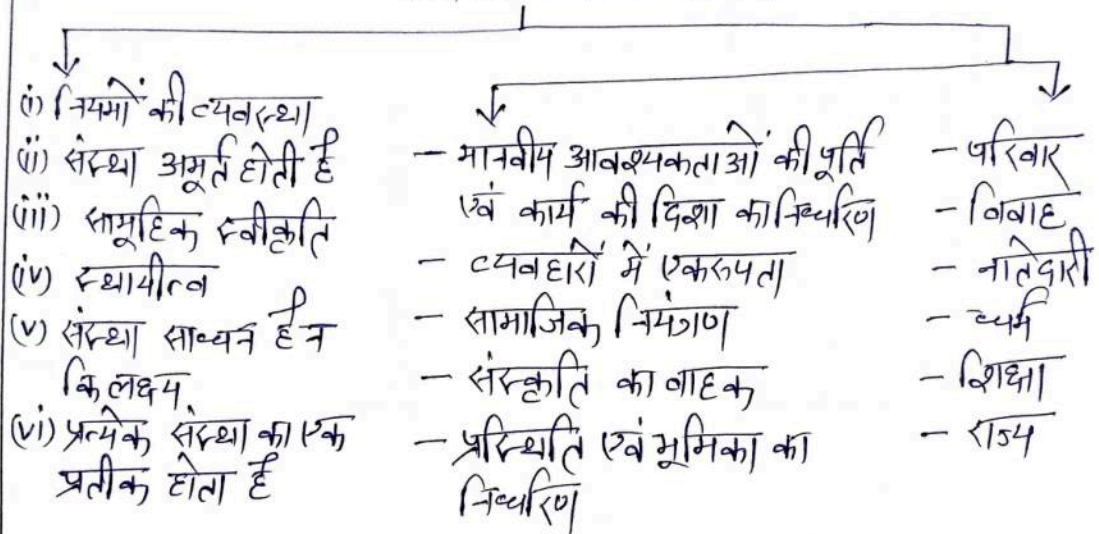
10/10/17

प्रश्न सं०-16

संस्था को परिभाषित करते हुए, इसकी विशेषताएं बताइये ?

उत्तर- मैकडवर के कथनानुसार, " सामूहिक क्रिया की विशेषता बताते वाली कार्यप्रणाली के स्थापित स्वरूप या अवस्था को संस्था कहते हैं।"

संस्था (INSTITUTION)



प्रत्येक संगठन कुछेक मान्यता प्राप्त एवं स्थापित नियमों, प्रथाओं एवं रीतियों पर आधारित होता है। इन प्रथाओं एवं नियमों को "संस्था" कहा जाता है। वे कार्यविधि के प्रकार हैं जिन्हें समाज द्वारा स्वीकृत किया जाता है तथा जो व्यक्तियों एवं समूहों के मध्य सम्बंधों को विनियमित करते हैं। इस प्रकार परिवार, विवाह, नातेदारी, धर्म, शिक्षा एवं राज्य प्रमुख संस्थाएँ हैं। सामाजिक नियंत्रण में संस्थाओं का प्रमुख योगदान है, विवाह परिवार को नियंत्रित करता है, शिक्षा विद्यालय को नियंत्रित करता है। राजनीतिक व्यवस्था राज्य को नियंत्रित करती है। संस्था व्यवहार एवं आचार की सामाजिक अवस्था है।

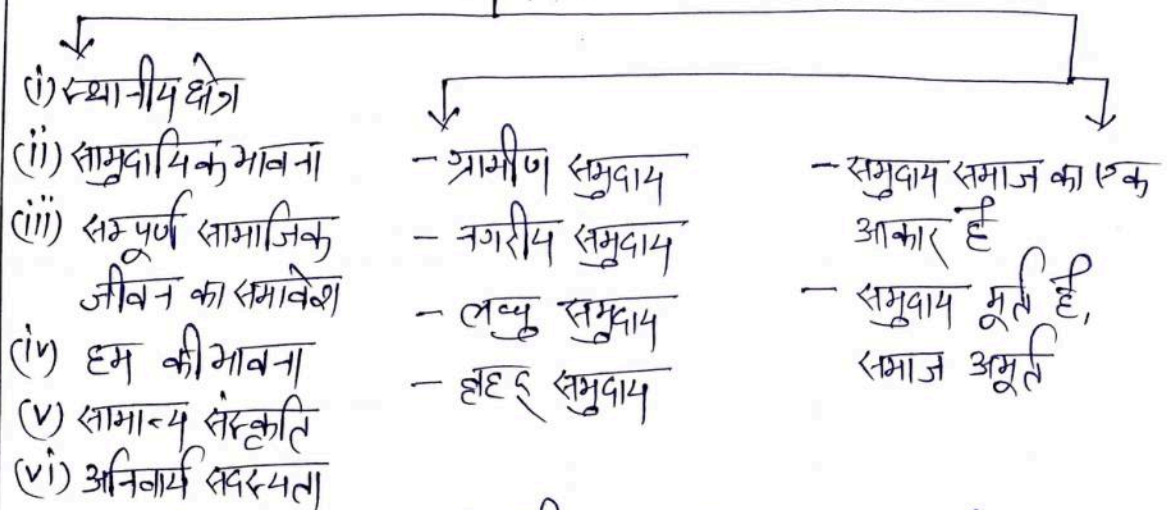
20701017

प्रश्न सं०-15

समुदाय से आप क्या समझते हैं, व्याख्या करें ?

उत्तर- समुदाय (Community), COM = साथ-साथ तथा MUNIS = सेवा करना है। "कम्युनिटी" लैटिन शब्द से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ "साथ-साथ रह कर सेवा करना है। प्रत्येक समुदाय का निश्चित नाम एवं उसकी अपनी एक सामान्य संस्कृति होती है।

समुदाय (Community)



हम मली मांति यह जानते हैं कि व्यक्ति अकेला नहीं रह सकता। वह एक निश्चित भू-भाग में उसके निकट रहने वाले व्यक्तियों के साथ ही सम्बन्ध रख सकता है। कुछ समय तक किसी विशेष स्थान पर रहने वाले लोगों में सामाजिक समानता, सामान्य सामाजिक विचार, सामान्य प्रथाएँ तथा एक-दूसरे के प्रति अपनेपन की भावना उत्पन्न हो ही जाती है। "सामान्य जीवन" एवं "सामान्य विशिष्ट क्षेत्र" की भावना से समुदाय का जन्म होता है। समुदाय चार प्रकार के हो सकते हैं - ग्रामीण, नगरीय, राष्ट्रीय एवं विश्व।

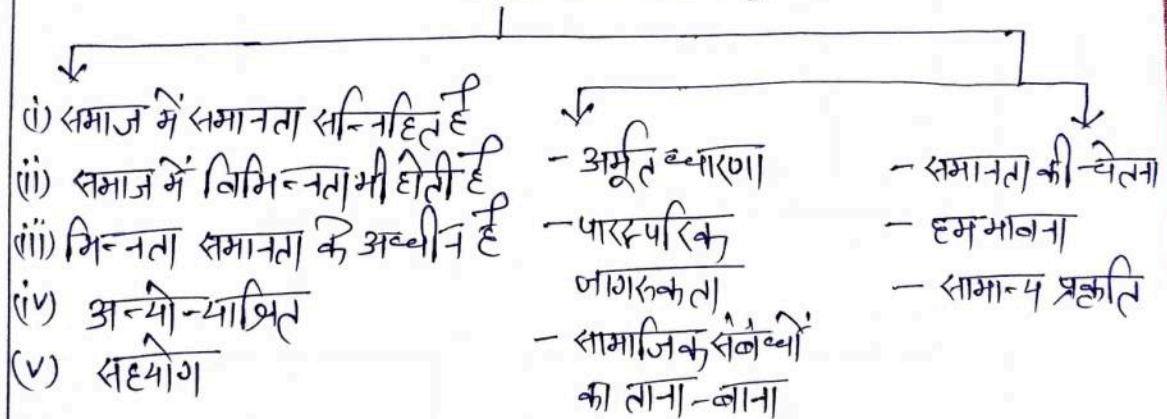
10/10/17

प्रश्न सं० - 14

समाज की परिभाषा तथा इसके तत्वों की व्याख्या करें?

उत्तर- समाजशास्त्र में "समाज" (SOCIETY) शब्द का अर्थ व्यक्तियों के समूह से नहीं है, अपितु उनके महत्व उत्पन्न अन्तर्क्रिया की जटिल प्रणाली से है। समाज का महत्वपूर्ण तत्व सम्बन्धों की व्यवस्था, अन्तःक्रिया के मानकों का प्रतिमान है जिसके द्वारा समाज के सदस्य अपना निर्वाह करते हैं।

समाज (SOCIETY)



समानता, अन्योन्याश्रित (Interdependence) एवं सहयोग समाज के आवश्यक तत्व हैं। मेक्सवेल ने समाज के अन्य तत्वों का वर्णन भी किया है जिसे वह परिपाटियों एवं प्रक्रियाओं, सत्ता एवं पारस्परिक सहायता अनेक समूहों एवं विभाजनों, मानवी व्यवहार के एवं स्वतंत्रताओं के नियंत्रणों की व्यवस्था कह कर परिभाषित करता है।

"समाज" शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया जाना चाहिए। यह संरचना एवं प्रक्रियात्मक दोनों प्रकार का संगठन है। इसमें व्यक्तियों की पारस्परिक अन्तर्क्रियाएँ तथा उनके पारस्परिक अन्तःसम्बन्ध सम्मिलित होते हैं।

Antolo.17

प्रश्न सं०-13

समाजशास्त्र का तुल्यविज्ञान से क्या संबंध है, स्पष्ट करें?

उत्तर- समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र (ANTHROPOLOGY) का वतना निकट संबंध है कि प्रायः ऐसा लगता है कि ये दोनों एक ही अध्ययन के दो नाम हैं।

मानवशास्त्र यूनानी शब्द "एन्थ्रोपास" (Anthropos) और "लोगोस" (Logos) से बना है, जिसका अर्थ क्रमशः "मनुष्य" तथा "अध्ययन" है। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ के अनुसार एन्थ्रोपोलाजी (मानवशास्त्र) का अर्थ है, "मनुष्य का अध्ययन" - मानव जाति के विकास का अध्ययन।

मानवशास्त्र को तीन भागों में विभाजित किया गया है -

- (i) भौतिक मानवशास्त्र - हमारे पूर्वजों की शारीरिक विशेषतायें
- (ii) सांस्कृतिक मानवशास्त्र - सांस्कृतिक अवशेषों एवं जीवित संस्कृति
- (iii) सामाजिक मानवशास्त्र - सामाजिक संस्थाओं एवं मानव संबंध

समाजशास्त्र का ऐतिहासिक पक्ष तो सांस्कृतिक मानवशास्त्र के ही समान है। समाजशास्त्र ने सांस्कृतिक क्षेत्र, सांस्कृतिक लक्षण, परस्परप्रभित लक्षण, सांस्कृतिक विलम्बन और दूसरी विचारधारायें सामाजिक मानवशास्त्र से उधार ली हैं। सामाजिक मानवशास्त्र के आव्याई पर सांस्कृतिक समाजशास्त्र का विकास हुआ है। लिटन, कार्डिनर, रेडफील्ड, हर्सेकोविच एवं बी. मैलिनोवस्की की संस्कृति अध्ययन ने समाजशास्त्र विशेष्यवस्तु में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

A0701017

प्रश्न सं०-12

समाजशास्त्र का राजनीतिशास्त्र से क्या संबंध है, स्पष्ट करें?

उत्तर- मॉरिस गिंसबर्ग (Morris Ginsberg) के कथनानुसार,
"भेदिक दृष्टि से समाजशास्त्र की मुख्य जड़ें राजनीतिशास्त्र (Political Science) एवं इतिहास-दर्शन में हैं।"

राजनीतिशास्त्र राज्य की सम्प्रभुता के अधीन संगठित सामाजिक समूहों का वर्णन करता है। यह सत्य है कि समाजशास्त्रीय ज्ञान के बिना राजनीतिशास्त्र का अध्ययन अपूर्ण है। सरकार के प्रकार, सरकार के अंगों की प्रकृति, राज्य का कार्यक्षेत्र, कानून आदि सामाजिक प्रक्रियाओं द्वारा निश्चित होते हैं।

समाजशास्त्र और आधुनिक राजनीतिक सिद्धांतों के कोरे में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जल वर्षों में राजनीति सिद्धांत में जो परिवर्तन हुए हैं, वे सभी समाजशास्त्र द्वारा अंकित एवं प्रभावित हैं। विकास के अनुसार हुए हैं। राजनीति में व्यवहारवादी उपायों ने राजनीतिशास्त्रीयों को समाजशास्त्रीयों की अनुसंधान पद्धतियों से बहुत कुछ सीखने पर बल दिया है।

समाजवाद, साम्यवाद, प्रजातंत्र एवं कल्याणकारी राज्य के सिद्धांत सामाजिक पुनर्गठन के ही सिद्धांत हैं। सुधारों का यही प्रश्न की, "राजा कैसा होना चाहिए?" इसका उत्तर समाज के राजनीतिक विचार की तत्त्वमीमांसा है।

A070101T

प्रश्न सं०-11

समाजशास्त्र का मनोविज्ञान से क्या संबंध है, स्पष्ट करें?

अन्तर- सामाजिक मनोविज्ञान (SOCIAL PSYCHOLOGY)

मनुष्य को सामाजिक प्राणि मानकर उसकी मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। विशेष रूप से यह व्यक्ति के मानसिक विकास पर समूह-जीवन के प्रभाव, समूह पर मानव मन के प्रभाव तथा समूहों के परस्पर मानसिक जीवन के विकास एवं उनके पारस्परिक सम्बंधों का अध्ययन करता है। इसके विपरीत, समाजशास्त्र उन विभिन्न प्रकार के समूहों का अध्ययन करता है जिनसे समाज बनता है।

मानव स्वभाव एवं व्यवहार को भली प्रकार समझने के लिए सामाजिक मनोविज्ञान को समाजशास्त्र पर निर्भर रहना पड़ता है, क्योंकि मनुष्य जिस समाज में रहते हैं, उसकी संस्चना एवं संस्कृति के बारे में आवश्यक जानकारी समाजशास्त्र ही देता है। परन्तु समाजशास्त्री को भी सामाजिक मनोविज्ञान से सहायता लेनी पड़ती है। समाजशास्त्री यह स्वीकार करते हैं कि सामाजिक संस्चना में होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिए मनोवैज्ञानिक आधार बड़े महत्वपूर्ण हैं। मानव व्यवहार के बारे में बेहतर समझ समाजशास्त्र के विषय को अव्यक्त वस्तुपरक एवं मथ्यात्मकी बनाने में सहायक होगी।

10701017

प्रश्न सं०-10

समाजशास्त्र का इतिहास सिखाया सेना है, स्पष्ट करे?

उत्तर- जी० ई० हावर्ड (G.E. Howard) के कथनानुसार, "इतिहास (HISTORY) भूतकाल का समाजशास्त्र है और समाजशास्त्र वर्तमान इतिहास है।"

इतिहास मनुष्य के विभिन्न समाजों के जीवन, उनमें हुए परिवर्तनों, उनके कार्य-कलापों के पीछे निहित विचारों और उनके विकास में सहायक या बाधक भौतिक अवस्थाओं का लेखा-जोखा है। समाजशास्त्र विभिन्न समाजों के ऐतिहासिक विकास के अध्ययन में रूचि रखता है। यह जीवन की विभिन्न अवस्थाओं, रहने के ढंग, रीति-रिवाज, विष्ठाचार और सामाजिक संस्थाओं के रूप में उनकी अभिव्यक्ति का अध्ययन करता है। इस प्रकार समाजशास्त्र को अपनी अध्ययन-सामग्री के लिए इतिहास पर निर्भर रहना पड़ता है।

आर्नेस्ट टॉम्बे (Arnold Toynbee) की पुस्तक "A Study of History" समाजशास्त्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण रही है। इतिहास तथ्य प्रदान करता है और समाजशास्त्र उनकी व्याख्या तथा उनका समन्वय करता है। इसी प्रकार समाजशास्त्र इतिहास के अध्ययन के लिए सामाजिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। यदि वर्तमान को समझने के लिए और भविष्य के मार्ग-दर्शन के लिए इतिहास को उपयोगी बनाना है, तो यह परभावश्यक है कि ऐतिहासिक तथ्यों की समाजशास्त्रीय ढंग से व्याख्या की जाये।

10701011

प्रश्न सं०-9

समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से क्या संबंध है, स्पष्ट करे ?

उत्तर— समाज पर आर्थिक तत्वों का प्रभाव पड़ता है और आर्थिक प्रक्रियाओं का निर्वहण सामाजिक वातावरण से होता है, अतः यह स्पष्ट है कि समाजशास्त्र (SOCIOLOGY) तथा अर्थशास्त्र (ECONOMICS) के मध्य गहरा संबंध है।

अर्थशास्त्र धन का उसके तीन रूपों— उत्पादन, वितरण एवं उपभोग का अध्ययन है। अर्थशास्त्र प्राणियों के भौतिक कल्याण से संबंधित है। परंतु भौतिक कल्याण पूर्ण मानव कल्याण का एक भाग है और इसकी प्राप्ति सामाजिक नियमों के अचिंतज्ञान से ही हो सकती है।

समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र की अनेक समस्याएँ मिली-जुली हैं। जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी, व्यापार-चक्र/मुद्रा-स्फीति, पर्यावरण प्रदूषण, श्रृंगी ओपेडी उन्मूलन, बाल एवं परिवार कल्याण तथा नगरीकरण की समस्याएँ उतनी ही आर्थिक हैं जितनी समाजशास्त्रीय, जिनका समाधान उस समय तक नहीं हो सकता है जब तक लोगों के सामाजिक दृष्टिकोण पर अचिंत ध्यान नहीं दिया जाता।

सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आर्थिक तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है समाजशास्त्रीयों की आर्थिक समस्याओं से गहरी अभिरुचि रही है।

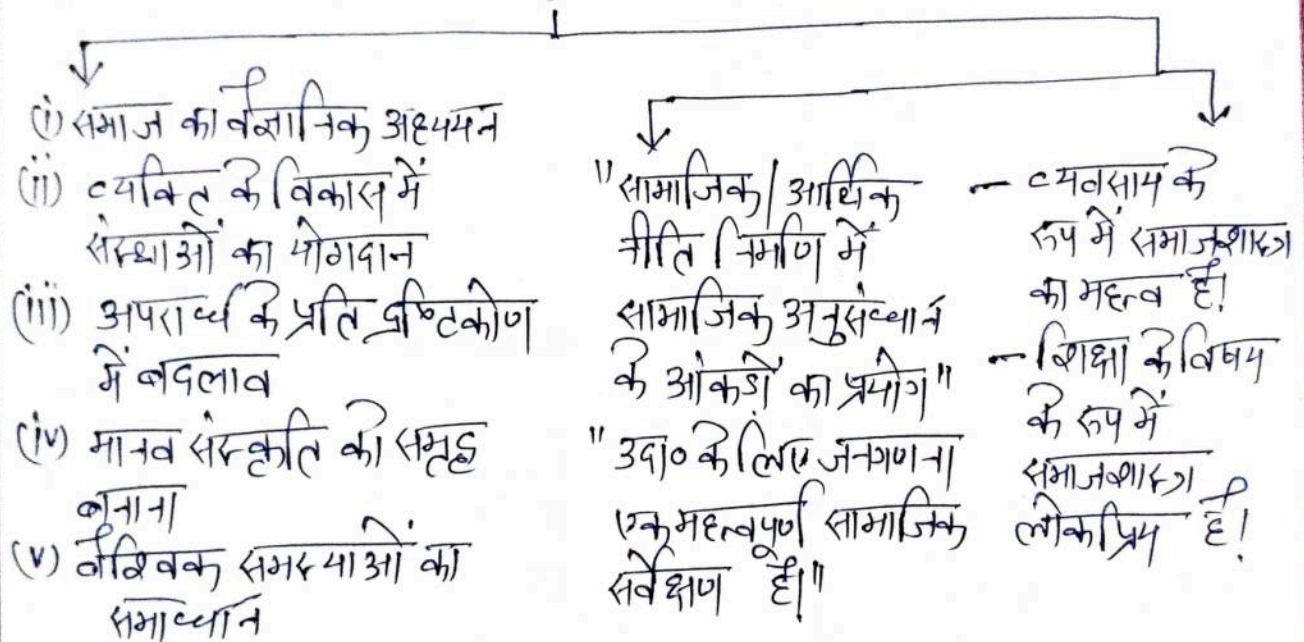
10/7/01/017

प्रश्न सं-0-08

समाजशास्त्र की वर्तमान समय में क्या उपयोगिता है, वर्णन करें ?

उत्तर- प्रो० एफ. एच. गिडिंग्स के कथनानुसार, "जिस प्रकार अधिशास्त्र यह बतलाता है कि जिन वस्तुओं को हम प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें कैसे प्राप्त करें, उसी प्रकार समाजशास्त्र बतलाता है कि हम जो बनना चाहते हैं, वैसे किस प्रकार बने।"

समाजशास्त्र का महत्व



वर्तमान समय में समाजशास्त्र राष्ट्रीय सीमाओं से परे वैश्विक विषयों को भी समाहित कर रहा है। भूमण्डलीकरण, वैश्विक अर्थमंडल (ग्लोबल वार्मिंग), लैंगिक समानता, स्वास्थ्य सुरक्षा तथा अर्ज सेक्टर (जीवाश्म ईंधन) आदि अनेक विषय हैं, जिन पर परस्पर संवाद आवश्यक है। बहु-ध्रुवीय विश्व एवं क्षेत्रीय संतुलन के कारण परस्पर सामंजस्य, शान्ति और सहयोग की आवश्यकता है। सामाजिक अनुसंधान, समाजशास्त्र को प्रासंगिक एवं लोकप्रिय बना रहे है।

20/10/17

प्रश्न सं०-७

समाजशास्त्र का एकविषय के रूप में विकास कैसे हुआ, स्पष्ट करें?

उत्तर- समाजशास्त्र का उद्भव फ्रांस में हुआ, लेकिन एक विषय के रूप में समाजशास्त्र का अध्ययन एवं अध्यापन फ्रांस में शुरू नहीं सका। एक अलग विषय के रूप में समाजशास्त्र का अध्ययन एवं अध्यापन अमेरिका के चैल विश्वविद्यालय में 1876 से प्रारम्भ हुआ। लेकिन इसको पृथक् विभाग के रूप में 1879 में चिकागो विश्वविद्यालय (अमेरिका) में शुरू किया गया।

समाजशास्त्र विषय को सर्वाधिक लोकप्रियता एवं प्रसिद्धि चिकागो विश्वविद्यालय के द्वारा प्राप्त हुई। फ्रांस में 1889, इंग्लैंड में 1907 तथा भारत में 1919 में समाजशास्त्र का अध्ययन एक पृथक् विषय के रूप में किया गया। जर्मनी में 1920, मिस्र में 1924, मैक्सिको में 1925 तथा स्वीडन में 1947 से अध्ययन - अध्यापन का कार्य प्रारम्भ हुआ था।

समाजशास्त्र के लिए महत्वपूर्ण कार्य चिकागो विश्वविद्यालय के द्वारा किया गया क्योंकि चिकागो शहर ने समाजशास्त्र के लिए अत्यधिक विषय सामग्री उपलब्ध कराई। जूलुस रॉसमॉल 1892 में चिकागो विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के संस्थापक सदस्य रहे और उन्होंने 1892 में "अमेरिकी समाजशास्त्रीय परिषद" की स्थापना की, जो आज भी अमेरिका में वैचारिकी विनिमय केन्द्र बना हुआ है। इसी परिषद के तत्वावधान में 1895 में प्रमुख पत्रिका "अमेरिकन जर्नल ऑफ सोसियोलॉजी" की शीव चली गयी।

20701011

प्रश्न सं०-06

भारतीय समाजशास्त्र के उद्भव एवं इतिहास का वर्णन करें?

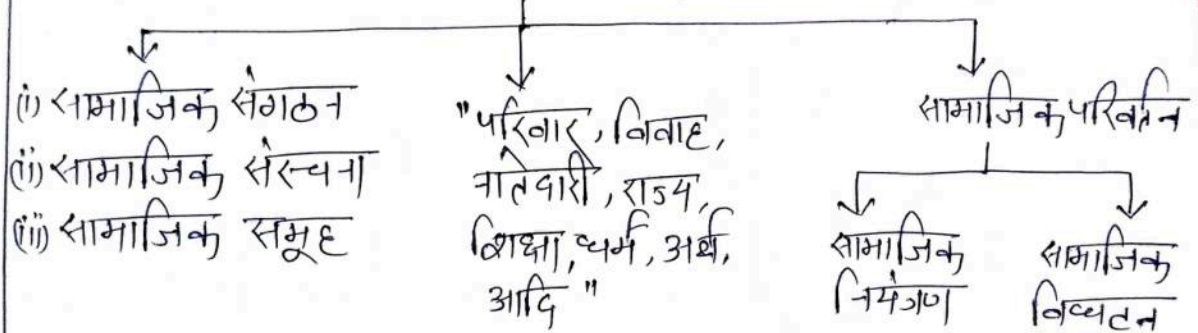
- उत्तर— भारत में समाजशास्त्र का अध्ययन लम्बे विश्वविद्यालय में सन् 1914 को अर्थशास्त्र विषय के साथ प्रारम्भ किया गया। लेकिन वर्ष 1919 में पेंड्रिक गिड्स की अध्यक्षता में पृथक् विभाग एवं विषय के रूप में इसकी पढ़ाई शुरू कराई गई। गिड्स के पश्चात् जी.एस. धरिये तथा उनके बाद के.एम. कपाड़िया उत्तराधिकारी बने।
- सन् 1917 में कोलकाता विश्वविद्यालय में डॉ० हजेन्द्र नाथ शील के विशेष प्रयत्नों से अर्थशास्त्र के साथ समाजशास्त्र का भी अध्यापन कार्य शुरू हुआ। डॉ० आर० के० मुर्जी, विनय कुमार सरकार, डी० एन० मजूमदार, डॉ० एन० के० बोस, डॉ० शील के शिष्य थे।
 - 1921 में डॉ० आर० के० मुर्जी के मार्गदर्शन में लखनऊ विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के अन्तर्गत समाजशास्त्र विषय को मान्यता मिली।
 - 1923 में मैसूर विश्वविद्यालय एवं आन्ध्र विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विषय का अध्ययन शुरू हुआ।
 - 1930 में पूना विश्वविद्यालय में श्रीमती शरावती कर्वे की अध्यक्षता में समाजशास्त्र विभाग स्थापित हुआ।
 - 1951 में पटना तथा वदोई विश्वविद्यालय में।
 - 1954 में बड़ोदा में।
 - 1958 में उदमानिया विश्वविद्यालय में।
 - 1959 में दिल्ली विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की पढ़ाई शुरू हुई।
- वर्तमान में इस विषय की लोकप्रियता इतनी बढ़ गई कि शायद ही कोई ऐसा विश्वविद्यालय हो, जहाँ समाजशास्त्र का अध्ययन शुरू करने से न होता हो।

10/10/17

प्रश्न सं०-05

समाजशास्त्र में मानवीय परिप्रेक्ष्य की भूमिका का वर्णन करें?
उत्तर- समाजशास्त्र की विषयवस्तु व्यापक है, पर प्रत्येक समस्या सामाजिक है, उसका मानवीय समाधान खोजना चाहिये। मानवीय परिप्रेक्ष्य के कारण सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था, संस्थागत रूप से, समाजशास्त्र का विषयबोध है।

मानवीय परिप्रेक्ष्य



समाज में व्याप्त अशिक्षा, बेरोजगारी, धार्मिक अलगाव, शोषण तथा सामाजिक संरचना में बिखराव का जब हम अध्ययन करते हैं तो मानवीय पक्ष महत्वपूर्ण हो जाता है। महिलाएँ, भूमिक, कृषक, युवा, अल्पसंख्यक, दलित आदि ये सभी वर्गमिक श्रेणियाँ हैं; पर इनकी समस्याओं को मानवीय पहलू से देखना चाहिये। बढ़ते हुए तलाक, पारिवारिक संरचना के लिए एक विप्लवनकारी कारक है, जिसका असर स्त्री/पुरुष दोनों पर पड़ता है। तलाक को रोकने के सामाजिक सेवाएँ ही प्रमुख मार्ग हैं, जो प्रभावशाली हो सकती हैं। सामाजिक समस्याएँ, मानवीय समाधान खोजती हैं, क्योंकि इनका असर समाज पर पड़ता है।

20/10/17

प्रश्न सं०-०५

"समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है", व्याख्या करें?

उत्तर- समाजशास्त्र एक ऐसा विज्ञान है जिसकी अपनी अलग विषय वस्तु "सम्पूर्ण सामाजिक जीवन" है। यह सभी सामाजिक व्यवस्था वस्तु के पीछे निहित सामान्य नियमों का वर्णन करता है। सामाजिक जीवन का अध्ययन करते समय यह अन्तःक्रियाओं का अध्ययन मनोवैज्ञानिक आन्वेषण के रूप में नहीं, अपितु सामाजिक संस्था के रूप में करता है।

सामाजिक जीवन बहुत जटिल है कि इसका अध्ययन करने के लिए हम का विभाजन आवश्यक है। इसलिए हमारे पास अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, विधि आदि विषय हैं। पुनरावृत्ति का मर्म न करते हुए इस बात को पुनः दोहराया जा सकता है कि, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीतिशास्त्र आदि द्वारा किये गये अध्ययनों का योग मात्र नहीं है।

समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है और अनेक विभिन्न सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन करता है। एक सामान्य विज्ञान के रूप में यह सभी समूहों एवं समाजों की समान विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए नितांत उपयुक्त है। मात्र वर्णन करना ही इसका द्येय नहीं है, अपितु कारणों एवं व्याख्याओं की खोज करना अधिक है। मनुष्य किसी प्रकार का आन्वेषण क्यों करते हैं, यही समाजशास्त्र का सामान्य प्रश्न है।

10/10/2017

प्रश्न सं०-०३

समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र (SCOPE) क्या है, स्पष्ट करें ?

उत्तर- "काल बर्तन" में यह विचार व्यक्त किया है कि, "समाजशास्त्र एक लचीला विज्ञान है। इसलिए यह निश्चित कर पाना कठिन है कि इसकी सीमा कहाँ से आरम्भ होती है और कहाँ जाकर समाप्त होती है।"

समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र



रविकृष्णन के सम्प्रदाय

इस विचार-धारा के प्रतिपादक

"मार्ज सिमेल" हैं।

"समाजशास्त्र की विविध सामाजिक

संबंधों के रूपों का अध्ययन करना चाहिए।"



सम-बोधन के सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय के प्रतिपादक

"पी. सोरोकिन" हैं।

"समाजशास्त्र केवल संबंधों

का अध्ययन नहीं करना, बरन समाज का अध्ययन करना है।"

समाजशास्त्र का क्षेत्र बहुत विरल है। यह एक सामान्य विज्ञान है,

परन्तु साथ ही एक विविध विज्ञान भी है। समाजशास्त्र की अध्ययन

वस्तु "समाज" है। जैसे-जैसे समाज जटिल होता जा रहा है, वैसे-

वैसे विविध समाजशास्त्रों का विकास होता जा रहा है।

परिवार, मानव-सौख्यकी, पारिस्थितिक विज्ञान, समुदाय का

समाजशास्त्र, आर्थिक समाजशास्त्र, अपराधशास्त्र,

होटे समूहों का समाजशास्त्र (जो मिंज (SEX) का समाजशास्त्र

आदि, नये अरुण क्षेत्र हैं। चार्लस में समाजशास्त्र के क्षेत्र

की परिसीमित करना न तो आवश्यक है और न सम्भव है।

№0701017

प्रश्न सं०-02

समाजशास्त्र की प्रकृति एवं स्वभाव का वर्णन करें।

उत्तर- किसी भी विषय की प्रकृति से आरंभ होता है कि वह विज्ञान है या कला। समाजशास्त्र के विषय में समाज वैज्ञानिकों के मते में विभिन्नता पाई जाती है। लेकिन आरत कोट्टे ने समाजशास्त्र को विज्ञान माना है। साथ ही साथ इसे "विज्ञानों की रानी" की संज्ञा भी प्रदान की।

समाजशास्त्रों को विज्ञान मानने वाले विद्वानों का तर्क है कि यह विज्ञान कैसे हो सकता है? इसके पास न तो अपनी कोई विषय सामग्री है, न ही मापने एवं लेने का यंत्र। साथ ही यह अविव्यवायी करने में भी असमर्थ है।

रोबर्ट बीरडी (Robert Bierstedt) ने अपनी पुस्तक "सामाजिक व्यवस्था" (The Social Order) में समाजशास्त्र की प्रकृति की निम्नलिखित विशेषताओं का वर्णन किया है—

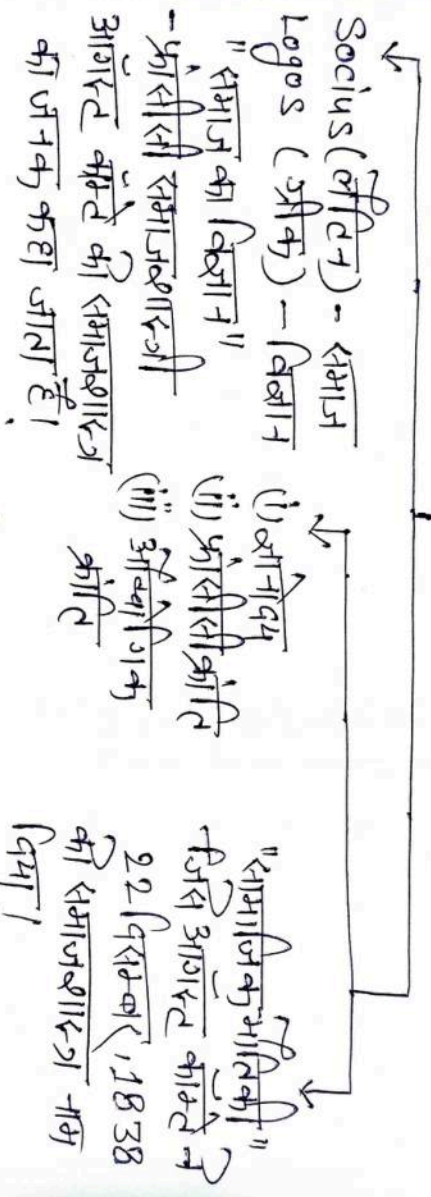
- (i) समाजशास्त्र एक सामाजिक, न कि प्राकृतिक विज्ञान है।
- (ii) समाजशास्त्र संकारात्मक, न कि आकस्मिक विज्ञान है।
- (iii) समाजशास्त्र एक विच्छिन्न अथवा स्थानिक, न कि व्यावहारिक विज्ञान है।
- (iv) समाजशास्त्र एक अमूर्त, न कि ठोस विज्ञान है।
- (v) समाजशास्त्र एक सामाजीकृत, न कि विशेषीकृत विज्ञान है।
- (vi) समाजशास्त्र एक परस्पर एवं आनुमानिक (Empirical) विज्ञान है।

सोसियोलॉजी

प्रश्न सं०-1

समाजशास्त्र क्या है? इसकी उत्पत्ति के विषय में वर्णन करें।
 उत्तर- "1750 से 1850" तक की अवधि को टी.वी. बॉलोमोर ने
 'अन्तर्गर्भ की संज्ञा दी है। उनका कहना है कि, "समाजशास्त्र एक
 आधुनिक विज्ञान है, जो एक वंशावली से अधिक पुराना नहीं है।"

समाजशास्त्र (SOCIOLOGY)



एक ऐसे सामान्य विज्ञान की आवश्यकता को महसूस किया गया जो समाज का उसके समाज रूप में अध्ययन करे। इसी हेतु समाजशास्त्र का निर्माण हुआ। इस प्रकार समाजशास्त्र का उद्देश्य समाज को समझना यह महसूस किया गया कि मानव-ज्ञान की अन्य शाखाएँ मनुष्य के सामाजिक व्यवहार का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करती।

एक और समाजशास्त्र संश्लेषणत्मक अनुशासन है जो विभिन्न अनुशासनों के निष्कर्षों को केन्द्रीय दृष्टिकोण से संश्लेषित करने का प्रयत्न करता है, दूसरी ओर यह एक विश्लेषणत्मक एवं विवेकीकरण विज्ञान है जिसमें शोधों का आयना अन्तर्गत होता है।